बरेलवी फ़िरक़ा जहन्नमी



और



अहमद रज़ा की कुफ़्रिया इ़बारात

मुअ़ल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

बरेलवी फ़िरक़ा जहन्नमी

(और अहमद रज़ा की कुफ़्रिया इबारात)

मुअल्लिफ़

डा०-आज़म बेग क़ादरी

09897626182

© जुमला हुक़ूक़ नाशिर के लिये मह़फ़ूज़ हैं

नाम किताब- बरेलवी फ़िरक़ा जहन्नमी
(और अहमद रज़ा की कुफ़्रिया इबारात)

मुअ़ल्लिफ़-डा० आज़म बेग क़ादरी

सने इशाअ़त-नवम्बर- 2021

कम्पोज़िंग-जुनैद अ़ली क़ादरी (अमन)
& ज़ैनुल आ़बदीन क़ादरी

क़ीमत- **50/-** रुपये

-: तम्हीद :-

इस दौरे फ़ितन में जहन्नमी फ़िरक़ों की कसरत हो गई है और हर फ़िरक़ा खुद को अह्ले हक़ व जन्नती होने का दाअ़वा करता है जबकि जन्नती जमाअ़त सिर्फ़ एक है और 72 फ़िरक़े दोज़ख़ में जायेंगे तो अब ये सवाल पैदा होता है कि जन्नती जमाअ़त व दोज़ख़ी फ़िरक़ों में क्या फ़र्क़ है और जन्नती जमाअ़त की अ़लामत क्या है और दोज़ख़ी 72 फ़िरक़ों की क्या क्या अ़लामात हैं ताकि इन दोज़ख़ी फ़िरक़ों से बचा जा सके और हक़ व जन्नती जमाअ़त से वाबस्तगी क़ायम की जा सके और जन्नती जमाअ़त के मशरब व मौक़िफ़ और उनके तर्ज़े अ़मल को इख़्तियार किया जा सके।

अल्लाह तबारक व तआ़ला की तौफ़ीक़ से मैं इस अह्म मौज़ूअ़ पर ये रिसाला तहरीर कर रहा हूँ ताकि ये लोगों की इस्लाह और रहुनमाई का ज़रिया बने और हक़ व हिदायत के रास्ते की तरफ़ लोगों की रग़बत बढ़े और राहे रास्त की तरफ़ लोग माइल हों और गुमराही से महफ़ूज़ रहें अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने हबीब के सद्क़े में हमारी इस किताब को बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल फ़रमाये और इस किताब को उम्मते मुस्लिमा की इस्लाह व रहनुमाई का ज़रिया बनाये आमीन।

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी

9897626182

–: बरेलवी फ़िरक़ा जहन्नमी :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि यहूदी इकहत्तर या बहात्तर फिरक़ों में तक़सीम हुये और ईसाई भी इकहत्तर या बहात्तर फिरक़ों में तक़सीम हुये और मेरी उम्मत तिहत्तर फिरक़ों में तक़सीम होगी
(अबू दाऊद–सुनन–4/497-ह०–4596)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/418-ह०–2640)

➡ अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बनी ईसराईल 72 मज़हबों पर मुताफ़र्रिक़ हुये और मेरी उम्मत 73 मज़हबों पर मुताफ़र्रिक़ होगी और उनमें से एक मज़हब जन्नत में जायेगा और बाक़ी सब अह्ले मज़हब दोज़ख़ में जायेंगे सहाबा किराम रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह जन्नत में जाने वाले लोग कौन हैं तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर होंगे। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/418-ह०–2641)

अब सुवाल पैदा होता है कि हर फ़िरक़ा ये कहता है कि वो अहले हक़ है और जन्नती है और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम)–

और सहाबा के तरीक़े पर है तो जब हम कुरान व सुन्नत पर ग़ौर करेंगे तो हमें इस इशकाल का हल मिल जायेगा तो सबसे पहले हम इस बात-का ज़िक्र करेंगे कि अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने हमें क्या नसीहत फ़रमाई है फिर हम बहात्तर 72 जहन्नमी फ़िरक़ों और एक जन्नती जमाअ़त की अ़लामत का तज़किरा करेंगे।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः-

और उन लोगों की तरह न हो जाना जो फ़िरक़ों में बट गये थे जबकि उनके पास वाज़ेह निशानियाँ आ चुकी थीं उसके बाद भी वो इख़्तिलाफ़ करने लगे और उन्हीं लोगों के लिये सख़्त अ़ज़ाब है। (सू०-आले इमरान-3/105)

एक दूसरे मक़ाम पर अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है बेशक जिन लोगों ने जुदा जुदा राहें निकाल कर दीन को पारा पारा कर दिया और वो मुख़्तलिफ़ फ़िरक़ों में बट गये (तो ऐ महबूब) आप किसी चीज़ में भी (उनके ज़िम्मेदार) नहीं हैं बस उनका मुआ़ामला अल्लाह के हवाले है फिर वो उन्हें उन कामों से आगाह फ़रमां देगा जो वो किया करते थे। (सू०-अनआ़ाम-6/159)

जहन्नमी फ़िरक़ों के मुताअ़ल्लिक़ अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है कि जिसने अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिश को माअ़बूद बना रखा है अल्लाह ने उसे इ़ल्म के बावुजूद गुमराह ठहरा दिया है और उसके कान-

और उसके दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया है फिर उसे अल्लाह के बाद कौन हिदायत कर सकता है सो क्या तुम नसीहत कुबूल नहीं करते। (सू०–जासिया–45/23)

तो इस आयते करीमा से हमें माअ़लूम हुआ कि 72 जहन्नमी फ़िरक़ों के लोग इ़ल्म के बावुजूद भी गुमराह हैं।

एक दूसरे मक़ाम पर इरशादे बारी तआ़ला है और बेशक हमने दोज़ख़ के लिये जिन्नों और इन्सानों में से बहुत से अफ़राद को पैदा फ़रमाया वो दिल व दिमाग़ रखते हैं मगर वो उनसे हक़ को समझ नहीं सकते और वो आँखें (भी) रखते हैं मगर वो उनसे हक़ को देख नहीं सकते और वो कान (भी) रखते हैं मगर वो उनसे हक़ को सुन नहीं सकते और वो लोग चौपायों की मिस्ल हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं और वही लोग ग़ाफ़िल हैं। (सू०–आअ़राफ़–7/179)

तो माअ़लूम हुआ कि जहन्नमी फ़िरक़ो के लोग अंधे बहरे और अ़क़्ल से खाली हैं जो न हक़ को समझ सकते हैं न देख सकते हैं न सुन सकते हैं ख़्वाह वो मुफ़्ती हों या आ़लिमे दीन हों क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने उन्हें इ़ल्म के बावुजूद गुमराह ठहरा दिया है और उनके कान और उनके दिलों पर मुहर लगा दी है और उनकी आँखों पर पर्दे डाल दिये हैं हालाँकि हर फ़िरक़ा अपने अ़क़ीदे–

पर मुतमईन और खुश फ़हमी का शिकार है और खुद को अह्ले हक़ व जन्नती समझता है और अह्ले हक़ पर होने का दाअ़वा करता है मगर वो अस्ल में हक़ पर नहीं हैं बल्कि वो बातिल पर है और तमाम अह्ले बातिल फ़िरक़े जहन्नमी हैं।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
पस उन्होंने अपने दीन के अम्र को आपस में इख़्तिलाफ़ करके फ़िरक़ा फिरक़ा कर डाला और हर फिरक़े वाले के पास दीन का जो हिस्सा है उसी पर इतरा रहा है (और उसी पर खुश है)।
(सू०-मु-मिनून-23/53)

एक और मक़ाम पर इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
और उनमें से न हो जाना जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े टुकड़े कर डाला और हर फ़िरक़ा उसी टुकड़े पर इतराता है जो उसके पास है।
(सू०-रुम-30/32)

तो माअ़लूम हुआ कि 72 जहन्नमी फ़िरक़ों के लोग दीन के एक हिस्से को कामिल दीन समझकर खुश हैं और इतराते हैं और कहते हैं कि हम तो हक़ पर हैं हालांकि वो हक़ पर नहीं बल्कि वो यक़ीनन गुमराह हैं और उनकी गुमराही की ताईद व तस्दीक़ और गवाही खुद अल्लाह तअ़ाला दे रहा है कि वो गुमराह व जहन्नमी हैं और जन्नती जमाअ़त सिर्फ़ एक है जिसकी अ़लामत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने हमें बतलाई है।

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा मेरी उम्मत गुमराही पर जमाअ़ न होगी यानी मुत्तफ़िक़ न होगी और जब तुम इख़्तिलाफ़ देखो तो सवादे आज़म (बड़ी जमाअ़त) जो कि ताअ़दाद के एतबार से बड़ी हो तो उसके साथ रहो यानी बड़ी जमाअ़त के साथ रहो।
(इब्ने माजा–सुनन–3/276-ह०–3950)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ाला मेरी उम्मत को गुमराही पर जमाअ़ नहीं फ़रमायेगा और अल्लाह तबारक व तआ़ाला का हाथ बड़ी जमाअ़त पर है और जो इस जमाअ़त से जुदा हुआ वो आग में गिरा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/64-ह०–2167)

और एक रिवायत में है कि अहले बातिल अहले हक़ पर कभी ग़ालिब नहीं आ सकेगें और ये कि तुम लोग गुमराही पर जमाअ़ न होगे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/267-ह०–4253)

➡ हज़रत सूबान (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत की एक जमाअ़त हमेशा हक़ पर रहेगी और वो अल्लाह–

की तरफ़ से मदद किये जायेंगे और जो उनकी मुख़ालिफ़त करेगा वो उन्हें कोई नुकसान न पहुँचा सकेगा हत्ता कि अल्लाह का हुक्म (क़यामत) आ-जाये। (मुस्लिम–सही–5/180-ह०–4950)
(इब्ने माजा–सुनन–1/31-ह०–10)

➡हज़रत जाबिर बिन समुराह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया दीन बराबर क़ायम रहेगा और इस दीन के लिये मुसलमानों की एक (अह्ले हक़) जमाअ़त हमेशा मुख़ालिफ़ीन से क़यामत तक लड़ती रहेगी।
(मुस्लिम–सही–5/181-ह०–4953,4954)

➡ जामेअ़ रिवायात में है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला जिस शख़्स की भलाई चाहता है उसको दीन में समझ अ़ता फ़रमाता है और मेरी उम्मत की एक (अह्ले हक़) जमाअ़त हमेशा अल्लाह के हुक्म पर क़ायम रहेगी और उस जमाअ़त पर हमेशा अल्लाह तआ़ला की मदद रहेगी और जो उस जमाअ़त को रुसवा करने की कोशिश करेगा या जो कोई उनका कुछ बिगाड़ना चाहेगा मगर कुछ भी बिगाड़ न सकेगा और न नुकसान पहुँचा सकेगा वो (अह्ले हक़) जमाअ़त हमेशा लोगों पर ग़ालिब रहेगी यहाँ तक अल्लाह तआ़ला का हुक्म आन पहुँचे। (मुस्लिम–सही–5/181-ह०–4955,4956)
(इब्ने माजा–सुनन–1/30-ह०–6,7,9)

➡हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरा रास्ता सीधा रास्ता है और मेरे रास्ते की इत्तेबाअ़ करो और ऐसे रास्तों की पैरवी न करो जो तुम्हें मेरे रास्ते से जुदा कर दे।
(इब्ने माजा–सुनन–1/31-ह०–11)

और एक रिवायत में है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मैंने अपने रब से दुआ़ की कि ऐ मेरे रब मेरी उम्मत को आ़म क़ह्त से हलाक न करना और उन पर उनके अन्दर के अ़लावा बाहर से कोई दुश्मन मुसल्लत न करना जो मेरी उम्मत को हलाक करके रख दे तो मेरे रब ने मुझे फ़रमाया ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मैं जब भी कोई फ़ैसला करता हूँ तो उसे रद्द नहीं करता मैं तेरी उम्मत को आ़म क़ह्त से हलाक नहीं करूँगा और उनके अन्दर के अ़लावा बाहर से कोई दुश्मन मुसल्लत नहीं करूँगा जो उन्हें हलाक करके रख दे अगरचा सब मुल्कों के लोग उन पर चढ़ दौड़ें तो उन्हें हलाक न कर सकेंगे अलबत्ता ये आपस में एक दूसरे को हलाक करेंगे और आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुझे अपनी उम्मत पर गुमराह इमामों का ख़ौफ़ है और मेरी उम्मत की एक जमाअ़त हमेशा हक़ पर रहेगी और अह्ले हक़ अह्ले बातिल पर हमेशा ग़ालिब रहेंगे व उनका कोई भी मुख़ालिफ़–

उनका कुछ भी बिगाड़ न सकेंगे।
(अबू दाऊद–सुनन–4/265-ह०–4252)

तो वाज़ेह हुआ कि 72 फ़िरक़े जहन्नम में जायेंगे और एक जमाअ़त जो जन्नत में दाख़िल होगी उसकी अ़लामत ये है कि वो सबसे बड़ी जमाअ़त होगी और ताअ़दाद के एतबार से उसमें कसरत होगी और 72 फ़िरक़े जो दोज़ख़ में जायेंगे उन 72 फ़िरक़ों की अ़लामत ये है कि ताअ़दाद के एतबार से वो क़लील (थोड़े) होंगे जैसे देवबन्दी, बरेलवी, वहाबी, क़ादयानी और ख़ारजी वग़ैराह क्योंकि दुनिया के एतबार से ये जहन्नमी फ़िरक़े दो चार मुल्क़ों तक महदूद होंगे और बड़ी जमाअ़त के लोग पूरी दुनिया के हर ख़ित्ते में मौजूद होंगे कहीं कम कहीं ज़्यादा तभी तो वो बड़ी जमाअ़त होगी जो ताअ़दाद के एतबार से बड़ी होगी।

तो जब हम बड़ी जमाअ़त पर ग़ौर करें तो सिर्फ़ हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में ही बड़ी जमाअ़त न देखें बल्कि पूरी दुनिया को तसव्वुर में लेते हुये ग़ौर करें कि अह्ले हक़ व अह्ले जन्नत की बड़ी जमाअ़त कौन सी है और फिर हम उस बड़ी जमाअ़त के साथ वाबस्ता रहें।

और अह्ले हक़ व अह्ले जन्नत की बड़ी जमाअ़त वो है जिन्होंने कुरान और अहले बैत को मज़बूती से पकड़ रखा है और वही लोग अह्ले हक़ व बड़ी जमाअ़त और अह्ले जन्नत के लोग हैं जिन पर अल्लाह तबारक व तआ़ला का हाथ–

है यानी अल्लाह तआ़ला का ख़ास फ़ज़्लो करम है और अल्लाह तआ़ला उन की मदद फ़रमाता है और वो हमेशा अह्ले बातिल पर ग़ालिब रहेंगे और वही लोग जन्नती हैं और उन के हक़ पर होने की ताईद व तस्दीक़ खुद हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाई कि मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी चीज़ें छोड़े जा रहा हूँ एक कुरान और एक मेरे अहले बैत और इनमें से कोई किसी से कमतर नहीं है कुरान व मेरे अहले बैत ये कभी आपस में जुदा न होगें हत्ता कि हौज़े कौसर पर ये दोनों इकट्ठे मेरे पास आयेंगे और जो इन दोनों को मज़बूती से थामे रहेगा वो कभी (भी) गुमराह न होगा और इनमें से अगर किसी एक को भी छोड़ दिया तो वो यक़ीनन गुमराह हो जायेगा।
(मुस्लिम–सही–6/93-ह०–6225,6227)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1105-ह०–3785)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–4/226-ह०–4576)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–5/166-ह०–4971)

तो माअ़लूम हुआ कि बड़ी जमाअ़त जो जन्नती है ये वो लोग होंगे जो कुरान व अहले बैत दोंनों को मज़बूती से थामे होंगे तो हमें चााहिये कि हम भी इसी जमाअ़त से हमेशा मुन्सलिक रहें ताकि हम हक़ पर रहें और हमारा ख़ात्मा ईमान बिल ख़ैर पर हो क्योंकि जो इस जमाअ़त से अलग हुआ वो आग में गिरा।

जैसा कि इरशादे बारी तआ़ला है

(रोज़े क़ियामत) अल्लाह फ़रमायेगा तुम जिन्नो व इन्सानों की उन (जहन्नुमी) जमाअ़तों में शामिल होकर दोज़ख़ में दाख़िल हो जाओ और जब भी कोई जमाअ़त (दोज़ख़ में) दाख़िल होगी तो वो अपने जैसी दूसरी जमाअ़त पर लाअ़नत भेजेगी यहाँ तक कि जब सारे गिरोह उसमें जमाअ़ हो जायेंगे तो उनके पिछले अपने अगलों के हक़ में कहेंगे ऐ हमारे रब इन्हीं लोगों ने हमें गुमराह किया था सो इनको दोज़ख़ का दो गुना अ़ज़ाब दे (सू०–आअ़राफ़–7/38)

➡ हज़रत अबू ज़र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने जमाअ़त से बालिश्त भर भी अ़लैहदगी इख़्तियार की उसने दीन इस्लाम की रस्सी को अपने गले से उतारकर फेंक दिया। (अबू दाऊद–सुनन–4/611-ह०–4758)

➡ हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मेरे बाद नई नई बातें पैदा होंगी या फ़ित्ना फ़साद का ज़माना आयेगा तो जब तुम देखो कि जिसने जमाअ़त छोड़ दी है तो उसने रसूलुल्लाह की उम्मत में फूट डाली और तफ़रक़ा पैदा किया तो तुम लोग ऐसे शख़्स को क़त्ल कर डालो क्योंकि अल्लाह तबारक व तआ़ला का हाथ जमाअ़त पर है और जमाअ़त से अ़लैहदा होने वाले के साथ शैतान होता है जो उसे लात मार

कर हाँकता है (नसाई–सुनन–3/134-ह०–4027)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने मुझसे पहले जिस उम्मत में नबी भेजा तो उस नबी की उम्मत में से उस नबी के कुछ सहाबी भी हुये जो उस नबी के तरीक़े पर रहे और उस नबी के हुक्म की पैरवी करते रहे फिर उन लोगों के बाद ऐसे नालायक़ लोग पैदा हुये जो जुबान से कहते थे मगर करते नहीं थे और उन कामों को किया करते थे जिनका उन्हें हुक्म नहीं होता था तो फिर जो कोई ऐसे लोगों से अपने हाथ से लड़े तो वो मोमिन है और जो अपनी जुबान से लड़े यानी इनको बुरा कहे और इनकी बुरी बातों को रद्द करे वो भी मोमिन है और जो कोई इनसे दिल से लड़े यानी इनको दिल में बुरा जाने वो भी मोमिन है और जो कोई दिल में भी इनको बुरा न जाने तो उसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं है
(मुस्लिम–सही–1/150-ह०–179)

हासिल नतीजा ये है कि मुसलमानों की बड़ी जमाअ़त जो अहले जन्नत हैं उनमें से कोई भी ऐसा नहीं जिसने कुरानो सुन्नत व अहले बैत से वाबस्तगी न रखी हो बल्कि कुरानो सुन्नत पर हुस्ने एतक़ाद के साथ ईमान रखा और उस पर गामज़न रहे और अहले बैत से सच्ची व ख़ालिस

मुहब्बत व अ़कीदत रखी मसलन अक्सर सहाबा, ताबईन, तबाअ़ ताबईन, मुहद्दिसीन, आइम्मा, व मुफ़स्सिरीन, मुअ़र्रिख़ीन, सलफ़े सालिहीन, औलिया किराम, सूफ़िया इज़ाम, व तमाम मुहिब्बाने अहले बैत उ़ल्मा व मुसलमान और वो जो यादगार हुसैन बशक्ले ताज़ियादारी करते हैं और बड़े जॉक, व शौक़ से इसका इहतिमाम करते हैं मज़कूरा इन सबकी जमाअ़त बड़ी जमाअ़त है जो जन्नती है बाक़ी सब 72 फ़िरक़ों के जुमरे में शामिल हैं जो सब के सब दोज़ख़ में दाख़िल होंगे।

-: हिस्सा दोम :-

अहमद रज़ा उर्फ़ आअ़ला हज़रत के कुफ़्रिया अ़क़ायद व इ़बारात

–:काफ़िर और कुफ़्र की ताअ़रीफ़:–

काफ़िर की ताअ़रीफ़:–

काफ़िर की दो क़िस्में हैं (1) असली (2) मुरतद
असली:– जो शुरु से ही कलिमा–ए–इस्लाम का मुन्किर हो उसे काफ़िर असली कहते हैं काफ़िर असली की भी दो क़िस्में हैं (1) जो कि ऐलानियाँ तौर पर कुफ़्र करे (2) जो कि अपने कुफ़्र को छुपाता हो तो ऐलानियाँ कुफ़्र करने वाले को काफ़िर मुअ़लिन और जो शख़्स अपने कुफ़्र को छुपाता हो उसे मुनाफ़िक़ कहते हैं।

मुरतद:– वो शख़्स जिसने पहले कलिमा पढ़ा और फिर उसने उस कलिमे का इन्कार कर दिया उसे काफ़िर मुरतद कहते हैं।

कलिमाते कुफ़्र की ताअ़रीफ़:– कुफ़्र का लुग़वी माअ़ना है किसी शैः का छुपाना और इस्तिलाही माअ़ना है कि ज़रुरियाते दीन की किसी शैः का इन्कार करना कुफ़्र है अगरचा वो बाक़ी तमाम ज़रुरियाते दीन की तस्दीक़ करता हो हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अपने रब के पास से जो कुछ भी लाये हैं उन सब की तस्दीक़ करना और सच्चे दिल से मान लेना और यक़ीन रखना ईमान है और उनमें से किसी बात को झुठलाना और उसमें अद्ना शक करना कुफ़्र है मसलन अल्लाह तआ़ाला की वहदानियत पर–

ईमान लाना और उसकी तमाम किताबों पर ईमान लाना और तमाम नबी व रसूलों पर ईमान लाना, फ़रिश्तों पर ईमान लाना, तक़दीर पर ईमान लाना क़ब्र से उठाये जाने और क़यामत पर ईमान लाना और हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) के आख़िरी नबी और रसूल होने पर ईमान लाना और जन्नत व दोज़ख़ वग़ैराह पर ईमान लाने को ईमान कहते हैं इनमें से किसी भी चीज़ का इन्कार करना कुफ़्र है और जो चीज़ें हम पर फ़र्ज़ की गई हैं जैसे रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात वग़ैराह इनमें से किसी चीज़ की फ़र्ज़ियत का इन्कार करना कुफ़्र है इसी तरह रब तआ़ला की हराम कर्दा चीज़ों को हलाल जानना कुफ़्र है जैसे शराब, जुआ़, सूद, सुअर का गोश्त, मुर्दार व खून और ज़िना वग़ैराह और अल्लाह तआ़ला की हलाल कर्दा चीज़ों को हराम जानना कुफ़्र है और अल्लाह तआ़ला और उसके नबी व रसूल की शाने अक़दस में अद्ना सी गुस्ताख़ी व तौहीन कुफ़्र है और ज़रुरियाते दीन में से किसी शैः का इन्कार करना या ख़िलाफ़ करना कुफ़्र है लेकिन इससे वो लोग मुराद नहीं हैं जिन्हें सहीह कलमा पढ़ना भी नहीं आता और वो लोग ज़रुरियाते दीन से ना वाक़िफ़ हैं।

—: अक़वाले कुफ़्रिया की अक़साम :—

(1) **लुज़ूमे कुफ़्र**— वो कलिमा—ए—कुफ़्र कि जिसमें इहतिमाल पाया जाये यानी वो कलिमा—ए—कुफ़्र जो ज़ुबान से सादिर हो और उसमें कोई ऐसा पहलू

हो जो क़ायल को कुफ़्र से बचा सके यानी सरीह कुफ़्र न हो यानी वो बात जो कुफ़्रे ऐ़न न हो मगर कुफ़्र तक पहुँचाने वाली हो यानी कुफ़्र ग़ैर सरीह, ग़ैर क़तई और ग़ैर इत्तिफ़ाक़ी हो तो इस क़िस्म का कुफ़्र करने वाला मुरतद नहीं होता तो ऐसे शख़्स को काफ़िर नहीं कहेंगे लेकिन उसके क़ौल और फ़ेअ़ल को कुफ़्र कहेंगे कुफ़्रे लुजूमी के मुरतक़िब को फुक़हा-ए-किराम काफ़िर कहते हैं मगर उ़ल्मा-ए-मुताकल्लिमीन कुफ़्रे लुजूमी के मुरतकिब को काफ़िर नहीं कहते बल्कि वो सुकूत इख़्तियार करते हैं तो जब लुजूमे कुफ़्र पर फुक़हा व मुताकल्लिमीन के दरमियान इख़्तिलाफ़ हो तो लुजूमे कुफ़्र करने वाला इस्लाम से ख़ारिज नहीं होता बल्कि उसे तौबा व तजदीदे ईमान व तजदीदे निकाह का हुक्म दिया जायेगा और ये हुक्म बतौर इहतियातन होगा।

इल्तिज़ामे कुफ़्र- इसको कुफ़्रे सरीह, क़तई और इत्तेफ़ाक़ी भी कहते हैं यानी वो बात जो कुफ़्रे ऐ़न हो यानी कुफ़्र सरीह, वाज़ेह और जली हो और उसमें कोई ज़ईफ़ से ज़ईफ़ भी इहतिमाल न पाया जाये और उसमें कोई ऐसे माअ़नी न पाये जाते हों जो क़ायल को कुफ़्र से बचा सकें इसको कुफ़्रे इल्तिज़ामी कहते हैं ऐसे कुफ़्र के मुरतकिब को मुरतद कहते हैं और इल्तिज़ामी कुफ़्र का मुरतकिब इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है और उसके तमाम आअ़माले सालिहा बर्बाद हो जाते हैं और उसका निकाह भी बातिल हो जाता है और-

उसकी ज़ोजा किसी से भी निकाह कर सकती है क्योंकि वो उसके निकाह से निकल जाती है और जिस कुफ़्र पर फुक़्हा व मुताकल्लिमीन दोनों ही मुत्तफ़िक़ हो जायें तो वो कुफ़्रे इल्तिज़ामी है और ज़रुरियाते दीन में से किसी शैः का इन्कार करना या ख़िलाफ़ करना और अल्लाह तअ़ाला व उसके रसूल हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) और जुमला अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की इहानत (तौहीन) करना और इनकी शानो अ़ज़मत में कलमा-ए-कुफ़्र या गुस्ताख़ी करना ये क़तअ़न व इज्माअ़न कुफ़्रे इल्तिज़ामी है और जब तक कलिमा-ए-कुफ़्र में इल्तिज़ाम की सूरत न हो तो क़ायल को क़ाफ़िर कहने से सुकूत किया जायेगा।

अहमद रज़ा उर्फ़ आला हज़रत बरेलवी के कुफ़्रिया अक़ायद व इबारतें

01–अहमद रज़ा बरेलवी ने बेअदबी और गुस्ताख़ी की सारी हदें पार करदीं अल्लाह तआ़ला की शान में अ़ज़ीम व इन्तिहाई तौहीन करते हुये अपनी किताब ''फ़तावा रिज़विया'' के जिल्द–15 सफ़ाह–546 पर लिखा 'मआ़ज़ अल्लाह अस्तग़ फ़िरुल्लाह' कि वहाबी ऐसे को खुदा कहता है जिसका मकान ज़मान (ज़माना) जिहत (सिम्त तरफ़) माहियत (हक़ीक़त, कुन्नियत, असलियत) तरक़ीबे अ़क़्ली से पाक कहना बिदअ़त हक़ीक़िया के क़बील (क़िस्म) से और सरीह कुफ़्रों के साथ गिनने के क़ाबिल है जिसका सच्चा होना कुछ ज़रुरी नहीं झूठा भी हो सकता है ऐसे को जिसकी बात पर एतबार नहीं न उसकी किताब क़ाबिले इस्तिनाद न उसका दीन लायक़े एतमाद ऐसे को जिसमें हर ऐ़बो नुक़्स की गुंजाइश है जो अपनी मशीख़त (बुजुर्गी) को बनी रखने को क़सदन ऐ़बी बनने से बचता है चाहे तो हर गन्दगी में आलूदा हो जाये ऐसे को जिस का इ़ल्म हासिल किये हासिल होता है व उसका इ़ल्म उसके इख़्तियार में है चाहे तो जाहिल रहे।

ऐसे को (खुदा कहते हैं) जिस का बहकना, भूलना, सोना, उँघना, ग़ाफ़िल रहना, ज़ालिम होना हत्ता कि मर जाना सब कुछ मुम्किन है व खाना पीना पेशाब करना, पाख़ाना फिरना और नाचना,

थिरकना, नट की तरह कला खेलना, औरतों से जिमाअ़ करना, लिवातत (इग़लाम) जैसी ख़बीस बेहयाई का मुरतकिब होना हत्ता कि मुख़न्नस की तरह खुद मखौ़ल (मज़ाक़) बनना व कोई ख़बासत (नापाकी, गन्दगी) कोई फ़ज़ीहत (ज़िल्लत) उसकी शान के ख़िलाफ़ नहीं वो खाने का मुँह और भरने का पेट और मर्द व ज़न दोनों की अ़लामतें बिल फ़ेअ़ल रखता है और यही नहीं बल्कि अपने आप को जला सकता है डूबो भी सकता है और ज़हर खाकर अपना गला घोंट सकता है बन्दूक मार कर खुदकुशी भी कर सकता है उसके माँ बाप ज़ोरु व बेटा सब मुम्किन हैं बल्कि माँ बाप ही से ये पैदा हुआ और ये रबड़ की तरह फैलता है सिमटता है

ऐसे को (खुदा कहते हैं) जिसका कलाम फ़ना हो सकता है जो बन्दों के ख़ौफ़ के बाइस झूठ से बचता है कि कहीं वो मुझे झूठा न समझें और वो बन्दों से छुपाकर पेट भर कर झूठ बोल सकता है ऐसे को (खुदा कहते हैं) जिसकी ख़बर कुछ और इ़ल्म कुछ और है ख़बर सच्ची है तो इ़ल्म झूठा है इ़ल्म सच्चा है तो ख़बर झूठी है ऐसे को जो सज़ा देने में मजबूर है न दे तो बेग़ैरत है मुआ़फ़ करना चाहे तो हीले ढूँढता है और राफ़्ज़ी ऐसे को खुदा कहते हैं कि हर चमार, हर कुत्ते, और हर सुअर ख़ाल्क़ियत में उसका शरीक है।
(फ़तावा रिज़विया–15/544,546,547)
(सुबहानस सुबूह–116,117,154,155)
अहमद रज़ा ने अपनी किताब हदायके़ बख़्शिश में

सफ़ाह 139 पर लिखा कि ''जैसे सबका खुदा एक है वैसे ही इनका उनका तुम्हारा हमारा नबी'' तो अहमद रज़ा ने माना कि सबका खुदा एक है तो फिर देवबन्दी वहाबी का खुदा दूसरा कैसे हो गया

02–इसी तरह की इ़बारत अहमद रज़ा की किताब ''अल्लाह झूट से पाक'' में भी लिखी हुई है कि अगर तुम्हारा साख़्ता (घढ़ा हुआ) खुदा अ़ौरत की क़दर से भी घट रहा है तो और भी गया गुज़रा हुआ अ़ौरत क़ादिर है कि ज़िना कराये तो तुम्हारे इमाम व तुम्हारे पिदरे ताअ़लीम पर वाजिब है कि तुम्हारा खुदा भी ज़िना करा सके वरना देवबन्द में बदकार अ़ौरतें तेरे उस खुदा पर क़हक़हे उड़ायेंगी कि निखट्टू तू हमारे बराबर भी न हो सका फिर काहे खुदाई का दम मारता है अब आपके खुदा में फुर्ज (शर्मगाह) भी ज़रुर हुई वरना ज़िना का है ख़नसे (हिजड़े, मुख़न्नस) खुदा के पुजारियो क्यों सुबूह (बेहद पाक) कुद्दूस (बड़ा पाक) के बन्दों से उलझते हो मूरती पूजन वाले हिन्दुओ अलग अलग लिंग व ज़ाहिरी मूर्ति बनाने के सौदे में पड़े हो मुक़द्दस मदरसा देवबन्द में आओ कि दोनों अ़लामतें एक ही माअ़बूद में पाओ और तअ़ाज्जुब था कि खुदा के लिये आला मरदुमी (यानी शर्मगाह का उ़ज़्वे ख़ास आला तनासुल) हो तो फिर उसके मुक़ाबिल अ़ौरत कहाँ से आयेगी अन्दाम (जिस्म) ज़नी हो तो उसके लायक़ उसे मर्द कहाँ से मिलेगा कयोंकि उसकी हर चीज़ ना महदूद व बे इन्तिहाई होगी। (अल्लाह झूठ से पाक है–सफ़ा–161,162)

पिछले सफ़ा पर मज़कूरा इबारात के तअ़ाल्लुक़ से अहमद रज़ा बरेलवी के पैरोकार जवाब देते हैं कि देवबन्दी वहाबी ने जब अपनी किताब में ये लिखा कि अल्लाह तअ़ाला झूठ बोल सकता है तो इसके जवाब में अहमद रज़ा ने लिखा कि अगर तुम्हारा अल्लाह झूठ बोल सकता है तो तुम्हारा अल्लाह ज़िना भी कर सकता है वग़ैराह मुख़्तलिफ़ कलमा-ए-कुफ़्र ये सब तमसीलात हैं हालाँकि किसी के कलमा-ए-कुफ़्र के जवाब में कलमए कुफ़्र कहने से कहने वाला काफ़िर हो जाता है जबकि अहमद रज़ा को चाहिये था कि उसके कलमा-ए-कुफ़्र के जवाब में उसकी बात का कुरान व अहादीस की रोशनी में रद्द करते और किसी की एक गाली का जवाब कसीर गालियों से देना अव्वल दर्जे की हिमाकत और जाहलियत है।

03– अहमद रज़ा ने अपनी किताब 'ख़त्मे नबूवत' में सफ़ाह-71 पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को उम्मत का राई (चर'वाहा) लिखा जो अपनी बकरियों को देखता है और ये नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शाने अक़दस मे सरीह गुस्ताख़ी व तौहीन है क्योंकि अल्लाह तबारक व तअ़ाला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है कि ''ऐ ईमान वालो मेरे महबूब को- राइना मत कहा करो बल्कि अदब से उन्ज़ुरना (यानी हमारी तरफ़ नज़रे करम फ़रमाइये'' कहा करो और काफ़िरो के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (सू०-बक़राह-2/104)

उ़ल्मा फ़रमाते हैं कि सरीह तौहीन में नीयत का एतबार नहीं किया जायेगा और राइ़ना कहने की मुमानियत के बाद भी अगर कोई सहाबी नीयते तौहीन के बग़ैर हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को राइ़ना कहे तो वो कुरान की वईद यानी काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ है और इस बात की दलील ये है कि नीयते तौहीन के बग़ैर भी हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की शान में तौहीन का कलमा कहना कुफ़्र है (किताब का नाम–''गुस्ताख़े रसूल की सज़ा सर तन से जुदा''––––सफ़हा–41 मुसन्निफ़– मौलाना अहमद रज़ा व मौलाना सय्यद अहमद सईद काज़मी व मौलाना गुलाम अ़ली)

''गुस्ताख़ों का बुरा अन्जाम'' इस किताब में लिखा है कि सू०–बक़राह की आयत में इरशाद फ़रमाया गया कि ऐ मुसलमानों राइ़ना के लफ़्ज़ में चूँकि राई़ (चर'वाहे) या रऊ़नत (गुरुर और सरकशी व तकब्बुर) का माअ़ना भी निकलता है और इसका एक माअ़ना सही भी है मगर बेअदबी होने की वजह से ऐसा लफ़्ज़ मेरे हबीब को न कहो वरना याद रखो काफ़िरों के लिये दर्दनाक अ़ज़ाब है। (किताब का नाम–––गुस्ताख़ों का बुरा अन्जाम–सफ़हा–16) (मुसन्निफ़–अल्लामा मुहम्मद फ़ैज़ अहमद उवैसी)

इसी तरह एक और किताब ''कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब'' में लिखा है कि अगर कोई

शख़्स हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) को उम्मत का चर‘वाहा कहे तो उसके लिये क्या हुक्म है जवाबः– ये तौहीन आमेज़ लफ़्ज़ है कहने वाला तौबा करे व तजदीदे ईमान करे व तजदीदे निकाह करे। (किताब–कुफ़्रिया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब सफ़्हा–204,205 -मुसन्निफ़- इलियास अत्तार क़ादरी व फ़तावा अमजदिया–4/257-260)

इसी तरह एक और किताब ‘‘हक़्कुल मुबीन’’ में लिखा है कि सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) बा नीयते ताअ़ज़ीम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को राइना कह कर ख़िताब किया करते थे मगर यहूदी चूँकि इस कलमे को हुजूर के हक़ में बा नीयते तौहीन इस्तेअ़माल करते थे इसलिये अल्लाह तआ़ाला ने सहाबा किराम (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुम) को राइना कहने से मनाअ़ कर दिया और इस हुक्म के बाद इस कलमे का हुजूर के हक़ में बोलना तौहीन और मूजबे (वाजिब करने वाला) अ़ज़ाबे अलीम क़रार दे दिया तो माअ़लूम हुआ ज़माने के लोगों की घटिया, हक़ीर व ज़लील तावीलों से नबूवते मुस्तफ़ा बहुत बुलन्द और बाला है और तावील करने वालों की मन घढ़त तावीलात उनको हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की तौहीन के जुर्मे अ़ज़ीम से बचा नहीं सकती। (किताब का नाम–हक़्कुल मुबीन–सफ़्हा–19,20 -------मुसन्निफ़–मौलाना सय्यद अहमद सईद काज़मी)

और अहमद रज़ा बरेलवी खुद अपने ही फ़तवे के मुताबिक़ काफ़िर हो गये जैसा कि अहमद रज़ा ने अपनी किताब 'तम्हीदे ईमान' में लिखा कि तमाम मुसलमानों का इज्माअ़ है कि जो रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शाने अक़दस में गुस्ताख़ी करे वो काफ़िर है और जो उसके अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ होने में शक करे वो भी काफ़िर है और जो किसी नबी की शान में गुस्ताख़ी के सबब काफ़िर हुआ उसकी तौबा किसी तरह कुबूल नहीं और जो भी उसके अ़ज़ाब या कुफ़्र में शक करे वो भी काफ़िर है।
(तम्हीदे ईमान–सफ़ाह–100–मुसन्निफ़–अहमद रज़ा)

04– अहमद रज़ा बरेलवी ने कुरान मजीद की सू० –हिज्र की आयत न० 28 के तर्जुमे में लिखा कि 'याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं आदमी को बनाने वाला हूँ बजती मिट्टी से जो बदबूदार सियाह गारे से है' मफ़हूम– यानी अल्लाह तआ़ाला ने हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) की तख़लीक़ बदबू दार मिट्टी से की।
(कंजुल ईमान–सू०–हिज्र–15/28)

और ये हज़रत आदम (अ़लैहिस्सलाम) व जुमला अम्बिया किराम अ़लैहिमुस्सलाम की शाने अक़दस में गुस्ताख़ी है क्योंकि नबी के लिये लफ़्ज़े बदबू का इस्तेअ़माल करना नबी की शान में गुस्ताख़ी और तौहीन है हालांकि दीगर मुतरजिमीन ने इस–

आयत का तर्जुमा किया कि और 'वो वाक़्आ याद करें कि जब आपके रब ने फ़रिश्तों से फ़रमाया कि मैं सियाह गारे की ख़नकती हुई मिट्टी से एक बशर को पैदा करने वाला हूँ।

05–अहमद रज़ा बरेलवी ने कुरान मजीद की सू० –फ़तह की आयत न०–2 के तर्जुमे में लिखा कि ''और तुम्हें सीधी राह दिखा दे'' और ये हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की शान में गुस्ताख़ी व तौहीन है क्योंकि कुरान मजीद में कई मक़ामात पर अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया ''इन्नका अ़ला सिरातिम मुस्तक़ीम'' यानी ऐ हबीब बेशक आप सिराते मुस्तक़ीम (यानी राहे हिदायत) पर (फ़ाइज़) हैं जबकि दीगर मुतरजिमीन ने इस आयते करीमा का तर्जुमा इस तरह किया कि बेशक अल्लाह तआ़ला ''आपको सीधे रास्ते पर साबित क़दम रखे''। (सू०–फ़तह–48/2)

तमाम अह्ले सुन्नत वल जमाअ़त का अ़क़ीदा है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) सरापा हिदायत हैं और अगर आप (मआ़ज़ अल्लाह) हिदायत याफ़्ता न होते तो लोगों को राहे हिदायत कैसे दिखाते और बेशक अल्लाह तआ़ला ने अपने प्यारे हबीब (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को सरापा हिदायत बनाकर मबऊ़स फ़रमाया और इसकी ताईद व तस्दीक़ व गवाही खुद कुरान ने दी है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक आप रसूलों में से हैं (और) सीधी राह पर (क़ायम) हैं। (सू०–यासीन–36/3,4)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक आप सीधी राह पर (क़ायम) हैं। (सू०–जुख़रुफ़–43/43)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और (अल्लाह तआ़ला) आपको सीधे रास्ते पर गामज़न रखे। (सू०–फ़तह–48/20)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ महबूब) आप फ़रमां दीजिये कि बेशक मेरे रब ने मुझे सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमां दी है (सू०–अनआ़म–6/161)

हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) सरापा हिदायत हैं और लोंगों की हिदायत का ज़रिया व वसीला भी हैं–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ये (अ़ज़ीम) किताब है जिसे हमने आपकी तरफ़ उतारा है ताकि आप लोंगों को (कुफ़्र व शिर्क की) तारीकियों से निकालकर (ईमान व हिदायत के) नूर की जानिब ले आयें (मज़ीद ये कि) उनके रब के हुक्म से उसकी राह की तरफ़ लायें जो ग़लबे वाला सब खूबियों वाला है। (सू०–इब्राहीम–14/1)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और बेशक आप तो (उन्हीं के भले के लिये) उन्हें सीधी राह की तरफ़ बुलाते हैं।
(सू०–मु–मिनून–23/73)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और बेशक आप ही सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ हिदायत अ़ता फ़रमाते हैं। (सू०–शूरा–42/52)

06– इसी तरह अहमद रज़ा बरेलवी ने एक और मक़ाम पर रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शाने अक़दस में गुस्ताख़ी की है अहमद रज़ा ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये लिखा कि 'इज़्ज़त बाअ़दे ज़िल्लत पे लाखों सलाम' (हदायक़े बख़्शिश–स०–134) जबकि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के लिये लफ़्ज़े ज़िल्लत का इस्तेअ़माल करना ये आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की शान में गुस्ताख़ी व तौहीन है क्योंकि कुरान मजीद में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाता है :– ''इज़्ज़त तो सिर्फ़ अल्लाह के लिये है और रसूल के लिये है और मोमिनों के लिये है मगर मुनाफ़िक़ीन (इस हक़ीक़त को) जानते नहीं हैं'' (सू०–मुनाफ़िकून–63/8)

07– इसी तरह अहमद रज़ा उ़र्फ़ आला हज़रत ने अल्लाह तआ़ला की शान में भी गुस्ताख़ी की है 'मल्फूज़ाते आला हज़रत' स०–531 पर लिखा है ग़ज़वा अहज़ाब का वाक़आ़ है कि अल्लाह तआ़ला

ने अपने हबीब (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की मदद फ़रमाना चाही तो शिमाली हवा को हुक्म दिया कि जा और काफ़िरों को नेस्त व नाबूद कर दे तो उसने इन्कार कर दिया और ये अल्लाह तबारक व तअ़ाला की शान में गुस्ताख़ी व तौहीन है क्योंकि जो हवा अल्लाह के हुक्म से अल्लाह के बन्दे और रसूल हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम के ताबेअ़ थी तो ये कैसे मुम्किन है कि वो हवा अल्लाह तअ़ाला के ताबेअ़ न हो जबकि कायनात का हर एक ज़र्रा अल्लाह के हुक्म के ताबेअ़ है और अल्लाह तअ़ाला की मर्ज़ी के बग़ैर एक पत्ता भी नहीं हिलता और कुल कायनात की हर शैः अल्लाह तअ़ाला क़ब्ज़े कुदरत में है और वो हर शैः का इहाता किये हुये है और ज़मीनो आसमान पर उसी की बादशाहत है और वो हर शैः को अम्रे कुन से अ़दम से वुजूद में लाने वाला है और सिवाय नाफ़रमान जिन्नों और इन्सानों के कोई भी शैः उसकी ना फ़रमानी नहीं करती।

बाअ़ज़ लोग अहमद रज़ा के दिफ़ाअ़ में कुरान मजीद की सू०-अहज़ाब की आयत न०-72 को बतौर दलील पेश करते हैं कि ‘‘बेशक हमने अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों पर पेश किया मगर उन सब ने उसके (बोझ) को उठाने से इन्कार कर दिया और वो उस से डर गये और इन्सान ने उसे उठा लिया’’ तो वो कहते हैं कि ज़मीन व आसमान और पहाड़ों पर जब अल्लाह तअ़ाला ने अमानत (यानी आअ़माल कि-

नेक आअ़्माल करोगे तो जन्नत व बुरे आअ़्माल करोगे तो दोज़ख़) को पेश किया तो आसमानों व ज़मीनों और पहाड़ों ने भी तो इन्कार कर दिया था और इसी तरह हवा ने भी इन्कार कर दिया तो इसमें ग़लत क्या है।

तो इसका जवाब ये है कि हवा को हुक्म था और ज़मीनो आसमान और पहाड़ों को पेशकश की गई थी और पेश कश और हुक्म में ज़मीनो आसमान का फ़र्क़ है मसलन हमारे सामने कई तरह की चीज़ें खाने वग़ैराह की पेश की जायें हम जिसे चाहे खा लें और जिसे चाहे न खांयें और हुक्म का माअ़ना होता है कि खुशी हो या ना खुशी वो काम करना ही पड़ेगा मर्ज़ी हो या न हो या खुशी से या ग़ैर खुशी से करना ही पड़ेगा जैसा कि रब तअ़ाला ने समावी कायनात को हुकम दिया तो वो दोंनों खुशी खुशी हाज़िर हो गये–

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
फिर वो समावी कायनात की तरफ़ मुताव्वजै हुआ तो वो (सब) धुआँ था सो उसने उसे (यानी आसमानी कुर्रों से) और ज़मीन से फ़रमाया कि तुम दोनों खुशी से आओ या ना खुशी से तो उन दोनों ने कहा कि हम खुशी खुशी आते हैं (सू०–फुस्सिलत–41/11)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
वो ज़ात निहायत बाबरकत है जिसके दस्ते कुदरत

में (तमाम जहानों की) बादशाही है और वो हर चीज़ पर पूरी तरह क़ादिर है। (सू०–मुल्क–67/1)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
आसमान व ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह तअ़ाला की मिल्कियत है और अल्लाह तअ़ाला हर चीज़ पर क़ादिर है। (सू०–बक़राह–2/284)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
आसामानो व ज़मीन और दोनों के दरमियान का कुल मिल्क अल्लाह तअ़ाला ही का है और वो जो चाहता है पैदा करता है और अल्लाह तअ़ाला हर चीज़ पर क़ादिर है। (सू०–मायदा–5/17)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
बेशक तुम्हारा रब अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः रोज़ में पैदा फ़रमाया फिर वो अ़र्श की जानिब मुतावज्जे हुआ और जिसने सूरज व चाँद और दूसरे सितारों को पैदा फ़रमाया कि वो सब तबई तौर पर उसके हुक्म के ताबेअ़ हैं। (सू०–आअ़राफ़–7/54)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
सूरज और चाँद को उसी ने फ़रमां बरदार कर रखा है कि हर एक मुक़र्ररा वक़्त तक चलता है। (सू०–लुक़मान–31/29)

उसी ने सूरज और चाँद को निज़ाम का पाबंद–

बना दिया है कि हर एक मिअ़ाद मुअ़य्यन पर-गश्त कर रहा है। (सू०-राअ़द-13/2)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
और चाँद की हमने मन्ज़िले मुक़र्रर कर रखी हैं यहाँ तक कि वो लौट कर पुरानी टहनी की तरह हो जाता है। (सू०-यासीन-36/39)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
न सूरज की ये मजाल कि (अपना मदार छोड़कर) चाँद को जा पकड़े और न रात ही दिन से पहले नमूदार हो सकती है और सब अपने अपने मदार में तैरते फिरते हैं। (सू०-यासीन-36/40)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
क्या तू नहीं देख रहा कि अल्लाह के सामने सब सज्दे में है सब आसमानों वाले और सब जमीनों वाले और सूरज व चाँद और सितारे और पहाड़ और दरख़्त और जानवर और बहुत से इन्सान भी। (सू०-हज-22/18)

08-अहमद रज़ा बरेलवी का क़ौल मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत में रक़म है कि हज़रत मूसा सुहाग मशहूर मजजूब थे और उनका मज़ार अहमदाबाद में है और मैं उन की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हुआ हूँ वो ज़नाना वज़अ़ रखते थे यानी वो लिबास वग़ैराह ज़नाना पहनते थे एक बार शदीद क़ह्त पड़ा तो बादशाह व क़ाज़ी और अकाबिर इनके पास आये

और दुआ़ के लिये कहा और ये इन्कार करते रहे यहाँ तक कि उन लोंगों के ज़्यादा अ़र्ज़ करने पर हज़रत मूसा सुहाग ने एक पत्थर लिया और दूसरे हाथ की चूड़ियों की तरफ़ लाये और आसमान की जानिब मुँह उठाकर कहा कि बारिश भेजिये या अपना सुहाग लीजिये हज़रत का ये कहना था कि घटाऐं पहाड़ की तरह उमड़ी और जल थल भर गये। (मल्फूज़ाते आला हज़रत–सफ़ाह–278)

09– इसी किताब के अगले सफ़ा पर लिखा है कि एक दिन हज़रत मूसा सुहाग नमाज़े जुमाअ़ के वक़्त बाज़ार में जा रहे थे और इधर शहर क़ाज़ी जामा मस्जिद को जा रहे थे तो उन्हें देखकर कहा कि ये ज़नाना लिबास मर्दो को हराम है इसलिये आप मर्दाना लिबास पहनें और नमाज़ के लिये चलें इस पर उन्होंने इन्कार न किया और चूड़ियाँ ज़ेवर और ज़नाना लिबास उतार दिया और शहर क़ाज़ी के साथ मस्जिद को चल दिये जब इमाम ने तकबीरे तहरीमा कही अल्लाहु अकबर ये सुनते ही हज़रत मूसा सुहाग की हालत बदल गई और फ़रमाया अल्लाहु अकबर मेरा ख़ाविन्द ऐसा ज़िन्दा है कि कभी न मरेगा और ये मुझे बेवा किये देते हैं आपका ये कहना था कि सर से पाँव तक वही सुर्ख़ लिबास था और वही चूड़ियाँ।
(मल्फूज़ाते आला हज़रत–सफ़ाह–279)

मआ़ज़ अल्लाह अस्तग़फ़िरुल्लाह अहमद रज़ा ने मूसा सुहाग को अल्लाह की बीवी बना दिया–

जबकि अल्लाह तआ़ाला बीवी व बच्चों से पाक व मुनज़्ज़ाह है अहमद रज़ा ने अल्लाह तआ़ाला की शान में अ़ज़ीम गुस्ताख़ी और तौहीन की है।

10– अहमद रज़ा बरेलबी ने अपने मरने से पहले जो वसीअ़त की वो किताब की शक्ल में मुरत्तब की गई इस किताब में लिखा है रज़ा हुसैन और तुम सब मुहब्बत व इत्तिफ़ाक़ से रहो और हत्तल इमकान इत्तेबाअ़े शरीअ़त न छोड़ों और मेरा दीन व मज़हब जो मेरी कुतुब से ज़ाहिर है उस पर मज़बूती से क़ायम रहना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है अल्लाह तौफ़ीक़ दे। (वसाया शरीफ़–सफ़ा–16) अहमद रज़ा के तबीब रज़ा हुसैन थे जो इनका इलाज करते थे।

मज़कूरा इबारत के एतराज़ के जवाब में अहमद रज़ा के पैरोकार कहते हैं कि क़ब्र में मुर्दा फ़रिश्तों के जवाब में कहता है कि मेरा दीन इस्लाम है तो अहमद रज़ा ने क्या ग़लत कहा तो इसका जवाब ये है कि क़ब्र में मुर्दा कहता है कि मेरा दीन इस्लाम है जबकि अहमद रज़ा ने सिर्फ़ मेरा दीन कहा है इस्लाम नहीं कहा है और मेरे दीन व मेरे मज़हब पर मज़बूती से क़ायम रहना हर फ़र्ज़ से अहम फ़र्ज़ है बल्कि इन्होंने अपना खुद का दीन ज़ाहिर किया है जो कि शरई एतबार से बातिल और कुफ़्र व शिर्क है।

11– कन्जुल ईमान (तर्जुमा–ए–कुरान) अहमद रज़ा

बरेलवी ने कुरान मजीद तर्जुमा किया और इसके तर्जुमे के साथ मुत्तसिल तफ़्सीर मौलवी नईमुद्दीन मुरादाबादी की है और आख़िर में कई उन्वानात पर मुश्तमिल एक फ़ेहरिस्त नईमुद्दीन मुरादाबादी ने मुरत्तब की जिसके एक उ़नवान के तहत लिखा कि ''अम्बिया व औलिया दूर से सुनते और मदद करते हैं'' और इस उ़नवान के ज़ेल में सूरह-आअ़राफ़ की आयत न०-17 को पेश किया और इस आयत का तअ़ाल्लुक़ अम्बिया व औलिया से कर दिया जो कि अम्बिया व औलिया की शान में सरीह गुस्ताख़ी व तौहीन है जबकि इस आयत का तअ़ाल्लुक़ शैतान लईन व उसके गिरोह से है:-

इरशादे बारी तअ़ाला है:-

'ऐ औलादे आदम (कहीं) तुम्हें शैतान फ़ित्ने में न डाल दे जैसे उसने तुम्हारे माँ बाप को जन्नत से निकाल दिया और उनसे उनका लिबास उतर'वा दिया ताकि उन्हें उनकी शर्मगाह दिखा दे बेशक वो खुद व उसका क़बीला तुम्हें (ऐसी ऐसी जगहों से) देखता रहता है जहाँ से तुम उन्हें नहीं देख सकते'। (सू०-आअ़राफ़-7/17)

अम्बिया व औलिया को शैतान कहना और शैतान के गिरोह में शामिल करना ये अम्बिया व औलिया की सरीह गुस्ताख़ी व तौहीन है हालाँकि अहले सुन्नत का ये अ़क़ीदा है कि अम्बिया व औलिया दूर से सुनते और मदद करते हैं जो कि कुरान व अहादीस के मुस्तनद दलाइल से ये साबित है।

मगर यहाँ कुरान की इस आयत की ग़लत तावील करके औलिया व अम्बिया का दूर से सुनना और मदद करना क़तअ़न दुरस्त नहीं है क्योंकि कुरान की इस आयत का सराहतन तअ़ाल्लुक़ शैतान व उसके गिरोह से है।

बाअ़ज़ लोग नईमुद्दीन मुरादाबादी के दिफ़ाअ़ में कहते हैं कि हर इन्सान से ग़लती का इम्कान है तो इसका जवाब ये है कि कन्जुल ईमान (तर्जुमा-ए-कुरान) की इशाअ़त कई मुख़्तलिफ़ मकातिब से कमो बेश पचास सालों से मुतवातिर हो रही है तो फिर आज तक उसकी इतनी बड़ी ग़लती व तौहीने अम्बिया व औलिया की दुरस्तगी क्यों नहीं की गई

12-अहमद रज़ा बरेलवी ने हदायक़े बख़्शिश जिल्द तीन (3) में उम्मुल मुअमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हा) की शान में गुस्ताख़ी और तौहीन की है अहमद रज़ा ने लिखा ''तंग व चुस्त उनका लिबास और वो जौबन का उभार मुस्की जानी है क़ब्बा सर से कमर तक लेकर ये फटा पड़ता है जौबन मिरे दिल की सूरत कि हुये जाते हैं जामा से बरों सीना ओ बर''।
(हदायक़े बख़्शिश-सफ़हा-37)

इस किताब की ताबअ़त 1325 हि० सन 1907 में हुई (किताब-फ़ाज़िले बरेलवी उ़ल्माये हिजाज़ की नज़र में स०-96) (मौलाना मुहम्मद महबूब अ़ली जो बरेलवी मसलक थे वो कहते हैं कि क़सीदा-

मदाहिया हज़रत उम्मुल मुमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआला अन्हा) और सात अशआर क़सीदा उम्मे ज़राअ वाले जो कि मुसन्निफ़ हज़रत अल्लामा (अहमद रज़ा) बरेलवी ने पुरानी क़लमी बोसीदा बयाज़ से निहायत ही इहतियात के साथ नक़ल किये है। (किताब–फ़ैसला मुक़द्दमा–स०–7)
(मुसन्निफ़–मौलाना मुहम्मद अ़ज़ीज़ुर्रहमान)
(बयाज़ का माअ़ना–सफ़ेदी, उजाला पन, और वो किताब जिसमें अशआर लिखते हैं)

13– मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत में लिखा है हाफ़िज़ुल हदीस सय्यदी अहमद के दो बीवियाँ थीं हज़रत सय्यदी अहमद से हज़रत सय्यदी ग़ौसुल वक़्त अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने फ़रमाया कि रात को तुमने एक बीवी के जागते हुये दूसरी बीवी से हम बिस्तरी की ये नहीं करना चाहिये था तो सय्यदी अहमद ने अ़र्ज़ किया कि हुजूर वो उस वक़्त सोती थी तो हज़रत अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने फ़रमाया वो सोती न थी बल्कि उसने सोते में जान डाल ली थी यानी सोती हुई बन गई थी तो सय्यदी अहमद ने अ़र्ज़ किया हुजूर आपको किस तरह इ़ल्म हुआ तो आपने फ़रमाया जहाँ वो सो रही थी तो वहाँ कोई और भी पलंग खाली था सय्यदी अहमद ने अ़र्ज़ किया जी हाँ एक पलंग खाली था तो आपने फ़रमाया उस पर मैं था और किसी भी वक़्त शेख़ अपने मुरीद से जुदा नहीं होता हर वक़्त उसके साथ रहता है।
(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–हिस्सा–2 सफ़हा–234)

जबकि ये खुली बेहयाई और बेशर्मी की इन्तिहां है और मशाइख़े इज़ाम की बेअदबी व तौहीन है कि शेख़ अपने मुरीद को उसकी बीवी से हम बिस्तरी के वक़्त देखता है।

14– अहकामे शरीअ़त के सफ़ा–9 पर लिखा है कि अहमद रज़ा की जुबान व क़लम नुक़्ता बराबर भी ख़ता करे इसको नामुम्किन फ़रमां दिया है जबकि ग़लती या ख़ता का इम्कान अम्बिया किराम से साबित है हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम व नूह (अ़लैहिस्सलाम) वग़ैराह से ग़लती या ख़ता सादिर हुई है तो फिर अहमद रज़ा बरेलवी से ग़लती या ख़ता का न होना ना मुम्किन कैसे हो सकता है हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) का क़ौल मुबारक कुरान मजीद में कुछ इस तरह ज़िक्र हुआ है कि उसी (अल्लाह) से मैं उम्मीद रखता हूँ कि वो मेरी ख़ता मुआ़फ़ फ़रमां देगा। (सू०–शुअ़रा–26/82)

अहमद रज़ा की लफ़्ज़ी व माअ़नवी ग़लती इसी किताब में मौजूद है अहकामे शरीअ़त स०–113 पर इन्होंने कुरान की आयत के लफ़्ज़ को तब्दील किया और माअ़ना भी तब्दील किया है यानी अहमद रज़ा ने कुरान की आयत की तहरीफ़ की है सू०–अहज़ाब की आयत न० 36 में लिखा है ''मिन अम्रिहिम'' और अहमद रज़ा बरेलवी ने ''मिन अम्रिहिम'' की जगह ''मिन अन्फुसिहिम'' लिखा और इसी अन्फुसिहिम का तर्जुमा भी लिखा यानी 'अपनी जानो का' जबकि कुरान की आयत–

के मुताबिक़ यहाँ मिन अम्रिहिम लिखना चाहिये था जिसका तर्जुमा ''अपने कामों में'' या ''अपने मुआ़मले में'' होना चाहिये था।

और सूरह-शुअ़रा की मज़कूरा आयत का तर्जुमा भी ग़लत किया है इस आयत में लफ़्ज़ 'ख़तीअती' है जिसका माअ़ना है ''मेरी ख़ता'' जो कि वाहिद मुताकल्लिम सीग़ा है और अहमद रज़ा ने तर्जुमा जमाअ़ का किया है यानी ''मेरी ख़तायें'' अहमद रज़ा ने हज़रत इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) की ख़ता को ख़तायें बना दिया और खुद को बेख़ता बताया यानी इस तरह तो मआ़ज़ अल्लाह अहमद रज़ा इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) से भी अफ़ज़ल हो गये।

15- अहमद रज़ा ने कुरान की तहरीफ़ की और कुरान की तहरीफ़ करना कुफ़्र है अल मल्फ़ूज़ सफ़ा-291 पर लिखा है जब फ़िरऔ़न डूबने लगा तो बोला ''आमन्तू बिल्लज़ी आमनत बिहि बनू इसराइला'' जबकि कुरान की आयत इस तरह है ''आमन्तु अन्नहु ला इलाहा इल्लल्लज़ी आमनत बिही बनू इसराइला वा अना मिनल मुस्लिमीन'' यानी मैं उस पर ईमान ले आया कि कोई माअ़बूद नहीं सिवाये उस (माअ़बूद) के जिस पर बनी-ईसराईल ईमान लाये हैं। (सू०-युनूस-10/90)

16- अहमद रज़ा बरेलवी अपनी किताब अहकामे शरीअ़त में दाढ़ी के मुताअ़ल्लिक़ एक सुवाल के जवाब में लिखते हैं कि दाढ़ी मुँढ़ाने व कतर'वाने

वाला फ़ासिक़ है उसे इमाम बनाना गुनाह है फ़र्ज़ हो या तरावीह किसी नमाज़ में उसे इमाम बनाना जाइज़ नहीं हदीस में उस पर ग़ज़ब और इरादा क़त्ल वग़ैराह की वईद वारिद हैं व कुरान मजीद में उस पर लाअ़नत है। (अहकामे शरीअ़त–190)

जबकि हदीस पाक में ऐसा कोई ज़िक्र नहीं मिलता कि उस पर ग़ज़ब व इरादा क़त्ल की वईदें वारिद हुईं हों और न कुरान में दाढ़ी मुढ़वाने वाले या कतर'वाने वाले पर लाअ़नत फ़रमाई गई हो ये अहमद रज़ा का कुरानो हदीस पर झूठ बाँधना है और कुरान पर झूठ बाँधना कुफ़्र है और झूठी हदीसें बयान करना भी गुनाहे अ़ज़ीम है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आख़िर ज़माने में ऐसे लोग पैदा होंगे जो तुमसे वो हदीसें बयान करेंगे जिनको न तुमने सुना होगा न तुम्हारे बाप दादाओं ने तो उनसे बचते रहना ऐसा न हो कि वो तुम्हें गुमराह कर दें और आफ़त में डाल दें। (मुस्लिम–सही–1/41-ह०–16)

➡ हज़रत मौला अ़ली (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया बिला शुबा जिसने मुझ पर झूठ बोला वो जहन्नुम में दाख़िल होगा। (मुस्लिम–1/57-ह०–1)(बुख़ारी–सही–1/148-ह०–106)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने क़सदन मुझ पर झूठ वोला वो आग मे अपना ठिकाना बना लें।
(मुस्लिम–सही–1/57ह०--2)
(बुख़ारी–सही–5/672-ह०–6197)

17– अहमद रज़ा बरेलवी ने अहकामे शरीअ़त में लिखा कि क़्यामत के दिन शाने सत्तारी जलवा फ़रमायेगी और लोग अपनी अपनी माँओं की तरफ़ निस्बत करके पुकारे जायेंगे।
(अहकामे शरीअ़त–सफ़ाह–204)

➡ जबकि हदीस पाक में है हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम लोग क़्यामत के दिन अपने और अपने आबा (बाप) के नामों से पुकारे जाओगे तो तुम अपने नाम अच्छे अच्छे रखा करो।
(अबू दाऊद–सुनन–4/724-ह०–4948)

तो अहमद रज़ा ने ये झूठ बोला है और ये हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर झूठ की तुहमत है और हुजूर की बात को झुठलाना कुफ़्र है।

बाअ़ज़ लोग मज़कूरा अहकामे शरीअ़त की इबारत के मुताअ़ल्लिक़ अहमद रज़ा का दिफ़ाअ़ करते हुये सूरह–बनी ईसराईल की आयत न०–71

की एक तफ़्सीर का हवाला देते हैं कि इस आयत में लफ़्ज़े इमाम से मुराद माँ है तो अहमद रज़ा ने कोई ग़लती नहीं की है जबकि किसी मुफ़स्सिर का क़ौल हदीस पर क़वी और मुक़द्दम नहीं होता और इस आयत की अक्सर मुफ़स्सिरीन ने जो तफ़्सीर की है उनमें लफ़्ज़े इमाम से मुराद माँ को नहीं लिया है मैं आयत और तफ़्सीर दोंनों को तहरीर कर रहा हूँ आप मुलाहिज़ा फ़रमायें और खुद फ़ैसला करें कि सही क्या है व ग़लत क्या है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वो दिन (याद करें) जब हम लोगों के हर तबक़े को उनके पेशवा के साथ बुलायेंगे सो जिसको उसका नामा आअ़माल दायें हाथ में दिया जायेगा पस ये लोग अपना नामा आअ़माल पढ़ेगे और उन पर धागे बराबर भी जुल्म नहीं होगा।
(सू०-बनी ईसराईल-17/71)

क़यामत के दिन जब कि हम तमाम इन्सानों को उनके अम्बिया किराम के साथ या ये कि उनके नामा आअ़माल के साथ या ये कि उनके दाअ़वते हिदायत देने वाले या दाअ़वते गुमराही देने वाले के साथ मिला देंगे। (तफ़्सीर इब्ने अ़ब्बास-2/195)

इरशाद फ़रमाया कि याद करो जिस दिन हम हर जमाअ़त को उसके इमाम के साथ बुलायेंगे जिसकी दुनियाँ में वो पैर'वी करता था हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने-

फ़रमाया इससे मुराद वो पेशवा हैं जिसकी दाअ़वत पर दुनियाँ में लोग चले।
(तफ़्सीर सिरातुल जिनान–5/491)

हर इन्सान को (रब तआ़ला) अपनी बारगाह में दुनियांवी आअ़माल के हिसाब व किताब के लिये उसके पेशवा और मुक़्तदा के नाम से या उसके साथ कि वो दुनियाँ में पेशवा, रहनुमा बनने वाला भी साथ होगा ख़्वाह काफ़िर हो या मोमिन, मुर्शिद हो या गुमराह, नेक हो या बद इमाम के बारें में मुफ़स्सिरीने किराम के सात अक़वाल हैं एक ये कि इमाम से वो शख़्स मुराद है जिसके पीछे लोग चलें, दूसरा ये कि अम्बिया किराम मुराद हैं तीसरा ये कि वो मज़हबी किताब मुराद है जिसको दुनियाँ में माना चौथा ये कि अ़क़ीदा क़ल्बी है पाँचवाँ ये कि आअ़माल मुराद हैं छटा क़ौल ये कि इमाम से मुराद उम्म है यानी वालिदा के नाम से पुकारा जायेगा मसलन हज़रत फ़ातिमा ज़हरा की औलाद वग़ैराह वग़ैराह साँतवा ये कि अख़्लाक़ व आदात मुराद हैं (तफ़्सीर नईमी–जि०–15/सफ़ाह–311,312)

मुजाहिद और क़तादा का बयान है कि इमाम से मुराद हर उम्मत के नबी हैं अबू सालेह व ज़हाक का क़ौल है कि किताबे इलाही मुराद है वो किताब जो हर उम्मत को दी गई, और हसन व अबुल आ़लिया का क़ौल है कि इमाम से मुराद इन्सान के वो आअ़माल हैं जो ज़िन्दगी में इन्सान पहले ही भेज देता है। (तफ़्सीर बग़वी–3/366)

इमाम इब्ने अबी शैबा ने हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) से ''यौमा नदऊ़ कुल्ला उनासिम बि इमामिहिम'' के तहत रिवायत किया है कि हम बुलायेंगे तमाम इन्सानों को उनके इमाम के साथ यानी हिदायत के पेशवा व गुमराही के पेशवा के साथ और इमाम इब्ने अबी हातिम ने तारीख़ में हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत किया कि इस आयत में इमाम से मुराद उनका नबी है। (दुर्रे मन्सूर–4/510)

इमाम से मुराद यहाँ नबी है हर उम्मत क़यामत के दिन अपने अपने नबी के साथ बुलाई जायेगी। (तफ़्सीर इब्ने कसीर–15/64)

और आयत का मफ़हूम यही है कि हर क़ौम को उसके नबी के नाम से बुलाया जायेगा कि फुलां नबी की क़ौम आये या फुलां नबी की उम्मत आये (तफ़्सीर कबीर–17/366)

जब हम तमाम इन्सानों को उनके पेशवाओं के साथ बुलायेंगे (यानी अम्बिया समेत) चुनांचा फुलां की उम्मत कहकर पुकारा जायेगा या आअ़माल नामे मुराद हैं (तफ़्सीर कमालैन–3/341)

इमाम से हर वो मुराद है जिसकी उन्होंने इक़्तिदा की होगी ख़्वाह वो पैग़म्बर हों, दीन के मुक़द्दम हों, किताब हो या इससे आअ़माल मुराद हैं। (तफ़्सीर मदारिक–2/428)

क़तादा फ़रमाते हैं इमाम से मुराद उनके नबी हैं अबू सालेह और ज़हाक फ़रमाते हैं इमाम से मुराद वो किताब है जो उनकी तरफ़ नाज़िल की गई थी हज़रत अ़ली (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआला अ़लैह वसल्लम) ने फ़रमाया क़ौम को अपने इमाम और उनके रब की किताब के साथ बुलाया जायेगा।
(तफ़्सीर–मज़हरी–5/535)

उनमें से हर इन्सान को उस किताब के साथ बुलाया जायेगा जिसमें उसके साथ अ़मल होंगे और इब्ने ज़ैद ने कहा है इससे मुराद उन पर नाज़िल की गई किताब है हज़रत मुजाहिद ने कहा कि ‘‘बि इमामिहिम से मुराद उन्हें अपने नबी के साथ पुकारा जायेगा। (तफ़्सीर–कुरतबी–5/720,721)

यहाँ इमाम से मुराद हर उम्मत का नबी है या इस से मुराद किताबें आसमानी हैं।
(तफ़्सीर–रुहुल बयान–3/217)

18– अहमद रज़ा से एक शख़्स ने सुवाल किया कि क्या जिन्नात व परी भी मुसलमान होते हैं तो इस सुवाल के जवाब में अहमद रज़ा ने कहा कि एक परी मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुई और वो अक्सर ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ करती थी एक बार अ़रसा तक हाज़िर न हुई जब हाज़िर हुई तो उससे सबब दरयाफ़्त फ़रमाया अ़र्ज़ की हुजूर मेरे एक अ़ज़ीज़ का हिन्दुस्तान में इन्तिक़ाल हो गया–

था मैं वहाँ गई थी तो राह में मैंने देखा कि एक पहाड़ पर इब्लीस नमाज़ पढ़ रहा है मैंने उसकी नई बात देख कर कहा कि तेरा काम तो नमाज़ से ग़ाफ़िल कर देना है तो तू खुद कैसे नमाज़ पढ़ रहा है उसने कहा कि शायद अल्लाह तआ़ला मेरी नमाज़ कुबूल फ़रमाये और मुझे बख़्श दे।
(अल मल्फ़ूज़–43 व मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–64)

जबकि कतुबे अहादीस में ऐसी कोई हदीस मौजूद नहीं है अहमद रज़ा बरेलवी ने हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) पर झूठ गढ़ा है यानी झूठी हदीस बयान की है और झूठी हदीस बयान करने वाले पर अहादीस मुबारका में सख़्त वईद आयी है हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने मुझ पर झूठ गढ़ा या झूठी हदीस बयान की तो वो अपना ठिकाना जहन्नुम में बना ले।

19– अहमद रज़ा बरेलवी ने अल मल्फ़ूज़ में एक सुवाल के जवाब में लिखा कि सरआ़ (मिर्गी का मर्ज़) बहुत ख़बीस बला है इसको उम्मुल सिबयान कहते हैं अगर बच्चों को हो, वरना मिर्गी तजुरबा से साबित हुआ है कि अगर 25 बरस के अन्दर अन्दर होगी तो उम्मीद है कि जाती रहेगी और अगर 25 बरस के बाद हुई तो अब न जायेगी हाँ किसी वली की करामत या ताअ़वीज़ से जाती रहे तो अम्रे आख़िर है ये हक़ीक़त में शैतान है जो इन्सान को सताता है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला–

अ़लैहि वसल्लम) के दरबार में एक औ़रत अपनी लड़की को लायी और अ़र्ज़ की कि सुबह शाम ये मसरुअ़ा हो जाती है (यानी इस लड़की पर सुबह शाम मिर्गी के दौरे पड़ते हैं) तो हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उसको क़रीब किया और फिर उसके सीने पर हाथ मारकर फ़रमाया ''उख़्रुज अ़दुव्वल्लाहि अना रसूलुल्लाहि'' यानी कि निकल ऐ खुदा के दुश्मन मैं अल्लाह का रसूल हूँ उसी वक़्त उसे कैः आयी और एक सियाह चीज़ जो चलती थी उसके पेट से निकली और ग़ायब हो गई और वो औ़रत होश में आई।
(अल मलफूज़ हिस्सा सोम सफ़ाह–311)

हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाते अक़दस तय्यब व ताहिर और तमाम ऊ़यूब व नुकूस से पाक व मुनज़्ज़ाह है तो हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के मुताअ़ल्लिक़ ये कहना कि आपने किसी औ़रत के सीने पर हाथ मारा ये आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाते पाक में तुहमत और शाने अक़दस में गुस्ताख़ी व तौहीन और कुफ़्र है मज़कूरा इ़बारत से ये बात वाज़ेह है कि वो जवान औ़रत थी चूंकि इसमें लिखा है 25 बरस के बाद ये बीमारी नहीं जाती हाँ अगर किसी वली की करामत से जा सकती है इसी ज़िमन से हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) के मुअ़जिज़े की मिसाल क़ायम की और एक मक़ाम पर लफ़्ज़े औ़रत का ज़िक्र है कि वो औ़रत होश में आई–

➡ जबकि हदीस पाक में औ़रत नहीं बल्कि लड़के का तज़किरा है हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि एक औ़रत अपने लड़के को लेकर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमते अक़्दस में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे बेटे को पागल पन के दौरे पड़ते हैं तो हुजूर ने उस लड़के के सीने पर अपना हाथ मुबारक फेरा और दुआ़ा की तो उस लड़के को कै़ः हुई और उसके पेट से काले रंग की कोई चीज़ निकली जो दौड़ती थी।
(मिश्कात–3/204-ह०–5669)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर‘वी है सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक औ़रत अपने बेटे को लेकर हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मेरे इस बेटे को जिन्न चिमटा हुआ है और वो इसे हमारे दोपहर और शाम के खाने के वक़्त पकड़ लेता है और हमें अपनी ख़बासत (नापाकी, गन्दगी, बुराई, व बद बातिनी व शरारत) से तंग करता है तो हुजूर ने उसके सीने पर अपना दस्ते अक़्दस फेरा और दुआ़ा की तो उस बच्चे ने कै़ः की तो वो जिन्न उसके पेट से सियाह पिल्ले की तरह दौड़ता हुआ निकल गया। (दारमी–सुनन–1/75-ह०–19)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–712/57-ह०–12460)
(मुस्नद अहमद–2/130-ह०–2288)

20– अहमद रज़ा बरेलवी ने फ़तावा रिज़विया में लिखा कि तमाम असल अशया में तहारत है हत्ता कि खिंजीर क्योंकि मनी खून से बनी और खून ग़िज़ा से बना और ग़िज़ा अ़नासिर से (असली अजज़ा या असल बुनियाद) से और अ़नासिर पाक हैं। (फ़तावा रिज़विया–4/441)

जबकि अल्लाह तबारक व तअ़ाला कुरान मजीद में इरशाद फ़रमाता है :–
आप फ़रमादें कि मेरी तरफ़ जो वही भेजी गई है उसमें तो मैं किसी (भी) खाने वाले पर (ऐसी चीज़ को) जिसे वो खाता हो हराम नहीं पाता सिवाये इसके कि वो मुर्दार हो या बहता हुआ खून हो या सुअर का गोस्त हो क्योंकि ये नापाक हैं। (सू०–अनअ़ाम–6/145)

21–अहमद रज़ा बरेलवी ने लिखा कि आस्तीन में कुत्ते का बच्चा है या बड़ा कुत्ता है तो इस हालत में नमाज़ जाइज़ है बशर्ते उसका मुँह बंधा हो। (फ़तावा रिज़विया–4/411,421,453)

जबकि घर के अन्दर कुत्ता रखना जाइज़ नहीं है और नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने घर में कुत्ता रखने की सख़्त मुमानियत फ़रमाई और हुजूर (अ़लैहिस्सलाम) ने सिवाय तीन असबाब के कुत्ता पालने से मनाअ़ फ़रमाया है तो फिर कुत्ते के साथ नमाज़ जैसी अ़ज़ीम इबादत कैसे जाइज़ हो सकती है चुनांचा–

हदीस पाक में हैः-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शिकार या खेत या फिर जानवरों की हिफ़ाज़त के अ़लावा जिसने कुत्ता पाला तो उसकी नेकियों में से एक क़ीरात सवाब रोज़ घटाया जायेगा।
(बुख़ारी-सही-3/503-ह०-3324)
(मुस्लिम-सही-4/200-ह०-4023)
(तिर्मिज़ी-सुनन-1/826-ह०-1489)
(अबू दाऊद-सुनन-3/295-ह०-2844)
(निसाई-सुनन-3/233-ह०-4295)

➡ हज़रत अबू तल्हा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस घर में कुत्ता या तस्वीर (जानदार) हो उस घर में फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते।
(मुस्लिम-सही-5/305-ह०-5514)
(बुख़ारी-सही-2/498-ह०-2105)
(अबू दाऊद-सुनन-1/228-ह०-227)
(निसाई-सुनन-1/135-ह०-264)

➡ उम्मुल मोमिनीन आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमातीं हैं कि हज़रत जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से एक वक़्त आने का वाअ़दा किया मगर फिर जब वो वक़्त आया तो जिबरईल

(अ़लैहिस्सलाम) नहीं आये तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिबरईल कभी वाअ़दा ख़िलाफ़ी नहीं करते हैं फिर आप ने देखा कि एक कुत्ते का पिल्ला तख़्त के तले बैठा है फिर आपके हुक्म से कुत्ते के पिल्ले को बाहर निकाला गया उसी वक़्त जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) आये तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ जिबरईल तुमने आने का वाअ़दा किया था फिर क्यों नहीं आये तो फिर जिबरईल (अ़लैहिस्सलाम) ने अर्ज़ किया कि हम उस घर में दाख़िल नहीं होते जिस घर में कुत्ता या तस्वीर (जानदार) हो

(मुस्लिम–सही–5/304-ह०–5511)
(अबू दाऊद–सुनन–5/206-ह०–4158)
(निसाई–सुनन–3/231-ह०–4290)
(बुख़ारी–सही–3/464-ह०–3227)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/506-ह०–2809)

22– अहमद रज़ा ने लिखा कि कुत्ते के दाँत पाक हैं और आदमी के नापाक क्योंकि कुत्ते को ज़िब्हा किया जा सकता है मगर आदमी को नहीं और ज़िब्हा के साथ वो पाक हो जाता है।
(फ़तावा रिज़विया–4/422)

23–बहारे शरीअ़त हिस्सा दोम नजासतों का बयान नजासतों के मुताअ़ल्लिक़ अहकाम मसला न०–17 सफ़ा न०–391 पर अमजद अ़ली लिखते हैं कि– चमदागड़ की बीट और पेशाब दोनों पाक हैं।

तो इसका जवाब ये है कुल मख़्लूक़ात में सबसे अफ़ज़ल व अरफ़ाअ़ व आअ़ला हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की ज़ाते अक़्दस है क्योंकि आप सरापा नूर हैं और फिर जुमला मख़्लूक़ात में इन्सान अशरफुल मख़्लूक़ है और बशरी एतबार से तमाम उम्मतों में सबसे अफ़ज़ल और बेहतरीन उम्मत हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की उम्मत है यानी मुसलमान हैं।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
(ऐ मुसलमानो) हमने तुम्हें बेहतर उम्मत बनाया ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और (हमारा ये बरगज़ीदा) रसूल तुम सब पर गवाह हो।
(सू०-बक़राह-2/143)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
तुम बेहतरीन उम्मत हो जो (कि) सब लोगों (की रहनुमाई) के लिये ज़ाहिर की गई है तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मनाअ़ करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो।
(सू०-आले इमरान-3/110)

तो माअ़लूम हुआ कि जब हम बेहतरीन उम्मत हैं तो ये कैसे मुम्किन हो सकता है कि मुसलमान के दाँत नापाक हों और कुत्ते के दाँत पाक हों और चमगादढ़ की बीट और पेशाब पाक हो जबकि दर हक़ीक़त पेशाब और बीट ये दोंनों नजासतें हैं

और हर नजासत एक गन्दगी है ख़्वाह नजासते ग़लीज़ा हो या नजासते ख़फ़ीफ़ा हो और मुसलमान के दाँत पाक हैं कुत्ते के नापाक हैं क्योंकि कुत्ते के मुँह की लार नापाक है और उसकी लार दाँतों से मुत्तसिल होती है और मुसलमान के दाँत पाक हैं क्योंकि मुसलमान का झूठा पीना जाइज़ है चूंकि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने कई मर्तबा सहाबाकिराम का झूठा दूध व सरीद नोश फ़रमाया जो सियाह सित्ता की हदीसे सहीहा से साबित है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) बयान फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं बहुत भूका था तो हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने मेरे चेहरे को देखा और जो कुछ मेरे मन में था मुलाहिज़ा किया और फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा मैंने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह मैं हाज़िर हूँ फिर आपने ने फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा मेरे साथ आओ तो मैं आपके साथ चल पड़ा फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अपने घर तशरीफ़ ले गये और आपने (मुझे अन्दर आने की) इजाज़त दी तो में अन्दर आ गया वहाँ एक प्याले में दूघ मौजूद था तो आप (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपनी अहलिया से दरयाफ़्त किया कि ये दूध तुम्हारे पास कहाँ से आया है उन्होंने जवाब दिया कि फुलां ने हद्या भेजा है

पस हुज़ूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि-

वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा अहले सुफ़्फ़ा के पास जाओ और उन्हें बुला लाओ हज़रत अबू हुरैरा बयान करते हैं कि अहले सुफ़्फ़ा इस्लाम के मेहमान थे उनका कोई घर बार व कोई माल जायदाद वग़ैराह नहीं थी जब भी रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में कोई सद्क़ा आता था तो आप उन लोगों की तरफ़ भिजवा देते थे आप उस सद्क़े में हिस्सेदार नहीं बनते थे लेकिन जब आपकी ख़िदमत में कोई तोहफ़ा आता तो आप उनकी तरफ़ भिजवा देते और उस तोहफ़े में उनके साथ हिस्सेदार भी होते थे हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं अल्लाह की क़सम मुझे ये बात नापसंद गुज़री और मैंने सोचा भला इतना सा दूध अहले सुफ़्फ़ा और मेरे और हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के लिये क्या काम आयेगा लेकिन मैं चला गया मैं उन लोगों को बुला लाया

फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उन्हें अन्दर आने की इजाज़त दी तो वो लोग अन्दर आ गये और तमाम लोग अपनी अपनी जगह पर बैठ गये फिर हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ अबू हुरैरा तुम ये दूध का प्याला लो और इन लोगों की तरफ़ दो हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि मैंने वो प्याला एक शख़्स की तरफ़ बढ़ाना शुरु किया फिर जो शख़्स उसे लेता वो सेर हो जाता तो मैं उससे वापस ले लेता और दूसरे शख़्स की तरफ़

बढ़ा देता हत्ता कि सब लोग सेर हो गये फिर मैं नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) के पास आया तो नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने अपना सर मुबारक उठाया और मुस्कुरा दिये फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अबू हुरैरा अब मैं और तुम बाक़ी रह गये हैं मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह आपने सच फ़रमाया आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम इसे लो और इसे पी लो इसके बाद आख़िर में बाक़ी रह जाने वाला दूध आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) नोश फ़रमाया और अपने पर'वर दिगार की हम्द बयान की (बुख़ारी-सही–5/290-ह०-5375)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/290-ह०–2477)
(बुख़ारी–सही–6/61-ह०–6452)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/540-ह०–6535)

➡हज़रत समुराह बिन जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमते अक़्दस में एक सरीद (यानी शोरबे में तर की हुई रोटी) का प्याला पेश किया गया तो वो लोगों के सामने रखा गया तो लोग सुबह से लेकर दोपहर तक यके बाअ़द दीगर लोग उसके पास आते रहे और कुछ लोग उठते तो दूसरे आकर बैठ जाते एक शख़्स ने हज़रत समुराह से दरयाफ़्त किया क्या वो बढ़ रहा था तो हज़रत समुराह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) ने फ़रमाया तुम्हें किस बात पर हैरानगी हो

रही है वो सिर्फ़ उस तरफ़ से बढ रहा था उन्होंने अपने हाथ के ज़रिये आसमान की तरफ़ इशारा करके कहा।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/1014-ह०–3625)
(इब्ने हिब्बान–सही–7/533-ह०–6529)
(मिश्कात–3/205-ह०–ह०–5674)

➡ हज़रत हिज़ाम बिन हिशाम (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) जब हिजरत करके मक्का से मदीना की तरफ़ र'वाना हुये तो आपका गुज़र उम्मे माअ़बद के ख़ेमे के पास से हुआ और उनसे गोस्त और खजूरें खरीदने के मुताअ़ल्लिक़ पूछा तो कोई भी चीज़ न मिल सकी फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने ख़ेमे की एक जानिब एक बकरी देखी जो बहुत कमज़ोर थी तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उस बकरी के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया तो उम्मे माअ़बद ने अ़र्ज़ की कि कमज़ोरी के बाइस ये बकरी रे'वड़ में नहीं जा सकती फिर आप (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़रमाया क्या ये दूध देती है उम्मे माअ़बद ने अ़र्ज़ किया कि ये इस बात से कोसों दूर है फिर आप अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया क्या तुम मुझे इस कमज़ोर बकरी का दूध दुहने की इजाज़त देती हो उन्होंने अ़र्ज़ की जी हाँ पस रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक बड़ा बर्तन मंगाया और उस बकरी के थनों में अपना दस्ते मुबारक फेरा और फिर दुआ़

फ़रमाई फिर बिस्मिल्लाह कहकर दुहना शुरु किया और बकरी ने अपनी टाँगे फैला दी कि दूध उतार लो फिर वो बड़ा बर्तन दूध से इतना भर गया जो कि बहुत से लोगों को सैराब कर दे फिर आपने उम्मे माअ़बद को बुलाया कि वो शिकम सेर हो गईं फिर आपने अपने असहाब को पिलाया फिर आख़िर में आपने खुद नोश फ़रमाया फिर दोबारा दूध निकाला यहाँ तक कि वो बर्तन भर गया फिर उस दूध को आपने उनके पास छोड़ दिया और उन्हें इस्लाम में दाख़िल किया फिर आगे र'वाना हो गये। (मिश्कात–3/212-ह०–5689)

➡ हज़रत इब्ने मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैं जवानी में उ़क्वा बिन अबू मुएत की बकरियाँ चराया करता था कि एक दिन नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ मेरे पास तशरीफ़ लाये और उन्होंने दरयाफ़्त किया ऐ लड़के क्या तुम्हारे पास दूध है मैंने जवाब दिया जी हाँ लेकिन मैं अमीन हूँ तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरे पास कोई ऐसी बकरी ले आओ जिसके साथ किसी बकरे ने जुफ़्ती न की हो तो मैं एक साल का बकरी का बच्चा ले आया आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उसे पकड़ा फिर उसके थन पर अपना हाथ मुबारक फेरा और दुआ़ की यहाँ तक कि उसका दूध उतरने लगा फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने एक बर्तन में दूध दुह लिया–

फिर आपने हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से फ़रमाया कि तुम पियो और फिर हजरत अबू बक्र सिद्दीक़ ने उसे पी लिया फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने उसे नोश फ़रमाया और फिर आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उस थन से कहा कि तुम खुश्क हो जाओ तो वो खुश्क हो गया और इस तरह हो गया जिस तरह पहले था।
(इब्ने हिब्बान–सही–7/508-ह०–6504)

24– अहमद रज़ा बरेलवी ने लिखा कि ज़िब्हा किये गये कुत्ते या भेड़िये की खाल पर किसी ने नमाज़ पढ़ी तो उसकी नमाज़ जाइज़ है।
(फ़तावा रिज़विया–4/434)

जबकि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने दरिन्दों की खालों के इस्तेअ़माल से मनाअ़ फ़रमाया और जब कुत्ते का खाना हराम है तो कुत्ते को ज़िब्हा ही क्यों किया जायेगा।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर एक दाँत वाले दरिन्दे का खाना हराम है (यानी जो दाँतों से शिकार करता है जैसे शेर, भेड़िया, कुत्ता, बिल्ली, वग़ैराह।
(निसाई–सुनन–3/244-ह०–4331)

➡ हज़रत अबू मलीह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने दरिन्दों की खालों (के इस्तेअ़माल) से मनाअ़ फ़रमाया। (निसाई–सुनन–3/220-ह०–4260)

➡ हज़रत मिक़दाम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मर्दों का सोना पहनने और चीते की खाल का बिछौना बनाने यानी इस्तेअ़माल करने से मनाअ़ फ़रमाया। (निसाई–सुनन–3/221-ह०–4261)

25–मर्द नमाज़ पढ़ रहा है और औ़रत ने मर्द का बोसा लिया तो मर्द की नमाज़ फ़ासिद नहीं होगी अगर मर्द ने नमाज़ी औ़रत का बोसा लिया तो औ़रत की नमाज़ फ़ासिद हो जायेगी।
(फ़तावा रिज़विया–1/471)

दौराने नमाज़ मर्द या औ़रत का बोसा लेना किसी भी सूरत जाइज़ नहीं है चूंकि ये नमाज़ के आदाब के ख़िलाफ़ है और वो अम्र व फ़ेअ़ल जिससे नमाज़ में ख़लल वाक़ेअ़ हो उन कामों को किसी भी सूरत जाइज़ नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि इससे नमाज़ के आदाब और खुशूअ़ व खुज़ूअ़ के फ़ौत होने का इम्कान है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

सब नमाज़ों की मुहाफ़िज़त किया करो और बिल–

खुसूस दरमियानी नमाज़ की और अल्लाह के हुजूर सरापा अदब व नियाज़ बन कर क़याम किया करो। (सू०–बक़राह–2/238)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

यक़ीनन वो अहले ईमान फ़लाह पा गये जो अपनी नमाज़ों में खुशूअ़ व खुजूअ़ करते हैं।
(सू०–मु–मिनून–23/1,2)

दौराने नमाज़ इधर उधर देखने और आसमान की तरफ़ देखने हत्ता कि हालते दुआ़ में आसमान की तरफ़ देखने की सख़्त मुमामिनयत फ़रमाई गई है तो फिर हालते नमाज़ में औ़रत का बोसा लेना कैसे जाइज़ हो सकता यहाँ तक कि हालते नमाज़ में जमाई को मक़रुह क़रार दिया गया और जमाई को हत्तल इमकान रोकने का हुक्म दिया गया है। हदीस पाक में हैः–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि नमाज़ में जमाई आना शैतान की तरफ़ से है सो जब किसी को जमाई आये तो उसे जहाँ तक हो सके मुँह बन्द करके रोके। (तिर्मिज़ी–सुनन–1/259-ह०–370)

➡ हज़रत आयशा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से उस शख़्स

के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया जो नमाज़ में इधर उधर देखता है तो आप सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ये शैतान की एक झपट है इसके ज़रिये से वो तुममें से किसी एक की नमाज़ उचक ले जाता है यानी वो नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। (बुख़ारी–सही–3/490-ह०–3291)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो लोग हालते नमाज़ में आसमान की तरफ़ देखते हैं वो इस हरकत से बाज़ आ जायें वरना उनकी आँखें छीन ली जायेंगीं (निसाई–सुनन–1/462-ह०–1196)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि लोगों को चाहिये कि वक़्ते दुअ़ा आसमान की तरफ़ न देखें वरना अल्लाह तअ़ाला उनकी आँखों की बीनाई ख़त्म कर देगा और ये हुक्म इस वजह से है कि बारगाहे खुदा वन्दी में ये हरकत बेअदबी और गुस्ताख़ी है। (निसाई–सुनन–1/487-ह०–1279)

26–‘मदाहे आला हज़रत’ रिसाला जो रज़वी कुतब ख़ाना से शाए हुआ है इस रिसाले के सफ़ाह न० –43 पर लिखा है ‘ये दुअ़ा है ये दुअ़ा है ये दुअ़ा है तेरा और सबका खुदा अहमद रज़ा’।

27– किताब 'सबाअ़ सनाबिल' में सफ़हा–278 पर एक झूटा, मनघढ़त वाक़आ लिखा है कि सुल्ताने हिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने एक शख़्स से बैअ़त लेने से पहले कहा कि अगर तुम ये कहो कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह चिश्ती रसूलुल्लाह' तो मैं तुम्हें मुरीद कर लूँगा और ये ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ पर झूटा बोहतान बांधना है व इसी किताब में अगले सफ़हा पर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती को (मआ़ज़ अल्लाह) कमीना लिखा है ये ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की शानो अ़ज़मत में सरीह गुस्ताख़ी व तौहीन और कलिमाते कुफ़्र है अहमद रज़ा बरेलवी ने फ़तावा रिज़विया में लिखा है कि 'सबाअ़ सनाबिल' किताब रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाह में मक़बूल है और ये रसूलुल्लाह पर झूट बांधना है। (फ़तावा रिज़विया–14/658)

हालांकि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि जिसने मुझ पर झूट बोला तो वो दोज़ख़ में जायेगा।

➡ हज़रत मौला अ़ली अ़लैहिस्सलाम से मर'वी है कि हुज़ूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुझ पर झूठ न बोलो बिला शुबा जिसने मुझ पर झूठ बोला वो दोज़ख़ में जायेगा। (बुख़ारी–सहीह–1/148–ह०–106)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/431–ह०–2661)
(मुस्लिम–सहीह–1/55–ह०–02, 03, 04, 05, 06)

➡ हज़रत अबू क़तादा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो कोई मुझ पर ऐसी बात कहे कि जो मैंने न कही हो तो वो अपना ठिकाना आग में बनाले।
(इब्ने माजा–सुनन–1/39–ह०–34)
(दारमी–सुनन–1/201–ह०–243)

➡हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर झूट बोले तो वो अपना ठिकाना दोज़ख़ में बनाले। (मिश्कात–1/102–ह०–198)
(बुख़ारी–सहीह–3/606–ह०–3461)

28– हज़रत बायज़ीद बस्तामी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से पूछा गया कि क्या तमाम मख़लूक़ रोज़े क़यामत रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के झन्डे के नीचे होगी तो आप ने फ़रमाया कि मैं कहता हूँ कि मेरे झन्डे के नीचे मख़लूक़ के अ़लावा अम्बिया किराम भी होंगे और अहमद रज़ा बरेलवी ने इसकी ताईद में लिखा कि ज़बान हज़रत बायज़ीद की थी और मुताकल्लिम अल्लाह तआ़ला था। (फ़तावा रिज़विया–14/667)
(तज़किरातुल औलिया–सफ़्हा–120)
जबकि ये रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) व अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की शान व अ़ज़मत में सरीह गुस्ताख़ी व तौहीन व तहक़ीर है

हालांकि कोई भी अल्लाह का वली विलायत के कितने ही अ़ज़ीम और बुलन्द मर्तबे पर फ़ाइज़ हो लेकिन वो दायरा-ए-शरीअ़त और रसूलुल्लाह की गुलामी से बाहर नहीं निकल सकता।

29-अहमद रज़ा खान बरेलवी का क़ौल मल्फ़ूज़ाते आअ़ला हज़रत में रक़म है कि अम्बियाकिराम को क़ब्रों में उनकी अज़वाजे मुताह्हरात पेश की जाती हैं और वो उनके साथ शबबाशी करते हैं।
(मल्फ़ूज़ाते आअ़ला हज़रत-हिस्सा-3-सफ़ाह-279)
और ये भी अम्बिया किराम (अ़लैहिमुस्सलाम) की शानो अ़ज़मत में सरीह गुस्ताख़ी व तौहीन है।

30- ''मल्फ़ूज़ाते आअ़ला हज़रत'' में अहमद रज़ा खान बरेलवी का क़ौल लिखा है कि बग़ैर ग़ौस के ज़मानो आसमान क़ायम नहीं रह सकते।
(मल्फ़ूज़ाते आअ़ला हज़रत-हिस्सा-1-सफ़ाह-178)

जबकि ये अल्लाह तआ़ला की शाने किब्ररियाई की सरीह तौहीन है और अहमद रज़ा बरेलवी का ये क़ौल अल्लाह तआ़ला के हर शैः पर क़ादिर होने की नफ़ी करता है जो कि कुफ़्र है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
बेशक अल्लाह आसमानों व ज़मीन को रोके हुये है कि वो (अपनी जगहों से) हट सकें और अगर वो दोंनों हटने लगें तो उसके बाअ़द कोई भी उन दोंनों को रोक नहीं सकता। (सूरह-फ़ातिर-35/41)

31– अहमद रज़ा खान बरेलवी ने अपनी किताब में लिखा कि देवबन्दीयों की किताबें इस क़ाबिल हैं कि उन पर पेशाब किया जाये व उन किताबों पर पेशाब करना पेशाब को मज़ीद नापाक कर देगा।
(सुबहानस सुबूह–(हाशिया) सफ़ा–75,92)
(अल्लाह झूट से पाक है–सफ़ा–94)

जबकि दीनी किताबें किसी मसलक या किसी भी मक्तबे फ़िक्र की हों उनमें आयाते कुरान व हदीसें लिखी होती हैं व उनमें अल्लाह तआ़ला व उसके प्यारे रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) का इस्मे पाक भी होता है और कुरान व हदीस और अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल के बाबरकत नाम पर पेशाब करने की कहने वाला अव्वल दर्जे का जाहिल काफ़िर मुरतद जहन्नमी है (मआ़ज़ अल्लाह अस्तग़ फ़िरुल्लाह)

32– अहमद रज़ा बरेलवी लिखते हैं कि नाअ़लैन शरीफ़ के नक़्श पर बिस्मिल्लाह लिखने में कुछ हर्ज नहीं। (फ़तावा रिज़विया–21/413)

33– अहमद रज़ा खान बरेलवी ने एक सुवाल कि 'खुदा हर जगह हाज़िर कहना कैसा है' के जवाब में लिखा कि अल्लाह तआ़ला जगह से पाक है ये लफ़्ज़ बहुत बुरे माअ़नी का इहतिमाल रखता है इससे इहतिराज़ लाज़िम है अल्लाह को हाज़िर व नाज़िर नहीं कहना चाहिये जो ऐसा कहता है वो ख़ता करता है।(फ़तावा रिज़विया–14/641,689,490)

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी तफ़्सीर नईमी में लिखते हैं कि नमाज़ी जब नमाज़ में अत्तहियात में कहता है कि 'अस्सलामु अ़लैका अय्युहन नबीय्यु' इससे माअ़लूम होता है कि नमाज़ी जिस तरह से अल्लाह तआ़ाला को हाज़िर व नाज़िर जाने उसी तरह हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को हाज़िर व नाज़िर जाने।
(तफ़्सीर नईमी–1/58)

अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी किसी मदरसे से नहीं पढ़े

अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी किसी अ़रबी मदरसा या दारुल उ़लूम से ताअ़लीम याफ़्ता नहीं थे इनकी अक्सर दीनी ताअ़लीम घर पर हुई थी ये अपने वालिद नक़ी अ़ली खान से पढ़े थे व नक़ी अ़ली खान भी किसी माअ़रुफ़ मदरसा या दारुल उ़लूम से फ़ारिग़ न थे वो भी घर में ही पढ़ते रहे।
(अल मीज़ान इमाम अहमद रज़ा–सफ़ा–337)
(फ़िरक़ा बरेबियत का तहक़ीक़ी जायज़ा–सफ़ा–46)

अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी ने दीनी उ़लूम में अपने वालिद के अ़लावा हज़रत शाह अबुल हुसैन नूरी से भी इस्तिफ़ादा किया व कुछ उ़लूम अपने ज़माने के उ़ल्मा से पढ़े बाक़ी उुलूम मुताअ़ला के ज़रिये हासिल किये।
(मुक़द्दमा–फ़तावा रिज़विया–सफ़ा–6 व 12)

–: अहमद रज़ा के दीगर फ़तवे :–

ख़िलाफ़े शरअ़ बारात में शरीक होना हराम। (फ़तावा रिज़विया–24/136)

किसी ख़िलाफ़े शरअ़ मजलिस में जाना व खाना दानों ही नाजाइज़ अगर खाना दूसरे जगह हो तो वहाँ भी आ़लिम व इमाम का जाना नाजाइज़। (फ़तावा रिज़विया–24/134)

क़ब्रों पर उ़र्स वग़ैराह करना नाजाइज़ व हराम। (फ़तावा रिज़विया–29/208,209)

मस्जिद के हुजरे में बैठकर ताबीज़ गण्डे करना नाजाइज़ है। (फ़तावा रिज़विया–8/95)

नमाज़ न पढ़ने वाला फ़ासिक़। (फ़तावा रिज़विया–6/223)

फ़ासिक़ की तौहीन वाजिब। (फ़तावा रिज़विया–24/407)

जो शख़्स ऐलानियाँ फ़ासिक हो उसे सलाम देना मक्रुह है। (फ़तावा रिज़विया–24/341)

कुत्ते की कोई चीज़ जैसे बाल, दाँत वग़ैराह हार में पहनकर नमाज़ पढ़ी तो जाइज़। (फ़तावा रिज़विया–4/421)

सुवाल–अगर वहाबी निकाह पढ़ाये तो हो जायेगा या नहीं। जवाब–निकाह हो जायेगा इस वास्ते कि निकाह बाहमी मन्जूर करना व कुबूल करने का नाम है अगरचा ब्राहमण पढ़ाये।
(अहकामे शरीअ़त–सफ़ा–249)

नमाज़ में इहतिलाम हुआ और सलाम फेरने तक मनी न निकली तो नमाज़ हो गई।
(फ़तावा रिज़विया–1/685, 686)

नमाज़ में टोपी गिर जाये तो उठा लेना अफ़ज़ल है। (फ़तावा रिज़विया–7/297)

सर पर रुमाल या बिला टोपी के रुमाल बाँध कर नमाज़ पढ़ने से नमाज़ मकरुह होगी।
(फ़तावा रिज़विया–7/299)

रुमाल पगड़ी वग़ैराह कि जिससे पेशानी छुपी हो नमाज़ मकरुह है। (फ़तावा रिज़विया–7/301)

अंग्रज़ी वज़अ़ के कपड़े हराम व सख़्त हराम हैं और उनमें नमाज़ मकरुह है फिर वो जाइज़ कपड़े पहन कर नमाज़ न फेरे तो वो गुनाहगार और अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ है। (फ़तावा रिज़विया–7/308)

मजलिसे मीलाद में ज़िक्रे विलादत के बाद शहादते इमाम हुसैन और वाक्अ़ाते करबला का ज़िक्र करना मनाअ़ है। (अहकामे शरीअ़त–सफ़ा–193)

अहमद रज़ा उ़र्फ़ आला हज़रत एक सवाल के जवाब में लिखते हैं जो शख़्स इमाम अबू हनीफ़ा के क़ियास को हक़ न माने वो काफ़िर है।
(इरफ़ाने शरीअ़त–स०–50 सवाल न०–23)

यज़ीद ख़बीस, मरदूद था मगर काफ़िर व मलऊ़न होने में इख़्तिलाफ़ है। (फ़तावा रिज़्विया–24/509)

काफ़िरा को जनाई बनाना सख़्त हराम।
(फ़तावा रिज़्विया–20/588)

मुशरिका व काफ़िरा के सामने मुसलमान औ़रत का नंगा होना जाइज़ नहीं।
(फ़तावा रिज़्विया–20/589)

जो काफिरों या ग़ैर मुस्लिम के किसी काम को अच्छा समझे जैसे खाना खाते वक़्त बाते न करने या फिर हालते हैज़ में औ़रत के पास लैटने को मजूसियों और आतिश परस्तों की अच्छी आदत कहे वो काफ़िर। (फ़तावा रिज़्विया–24/531)

आतिश परस्तों की टोपी पहनी ख्वाह संजीदगी या हंसी मज़ाक में वो काफ़िर हो जायेगा।
(फ़तावा रिज़्विया–24/549,550)

कुफ़्फ़ार की टोपी या रुमाल उस शक्ल में बनाकर सर पर रखना हराम है और वो काफ़िर है।
(फ़तावा रिज़्विया–24/550)

जो मुशरिक के साथ रहे वो उसी मुशरिक की मानिन्द है। (फ़तावा रिज़विया–24/313)

हिन्दू, यहूदी, नसरानी का बनाया हुआ साबुन जिसमें चर्बी पड़ी हो नापाक व हराम है। (फ़तावा रज़विया–4/573)

अंग्रेजी दवाइयों में जिस क़दर पतली दवाइयाँ हैं सब में ऊ़मूमन शराब होती है वो सब नजिस व हराम हैं। (मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–3/365)

वहाबी व ग़ैर मुक़ल्लिद से मेलजोल हराम उसके साथ शादी ब्याह ख़ालिस ज़िना है। (फ़तावा रिज़विया–24/330)

काफ़िर जो होली दीवाली में मिठाई वग़ैराह बाँटते है तो उस रोज़ न लें दूसरे रोज़ लेलें और न ये समझकर कि उन खुबशा (खबीस) के त्यौहार की मिठाई है। (मल्फ़ूज़ाते आअ़ला–हज़रत–163)

श्री किशन (कृष्ण भगवान) काफ़िर था। (फ़तावा रिज़विया–14/659, 658)

क़ौले अहमद रज़ा कि मेरे पेट में दर्द था तो एक काफ़िर ने मेरे पेट पर हाथ रख कर कहा कि–यहाँ दर्द है तो मुझे उसका नजिस हाथ बदन को लगने से इतनी कराहत व नफ़रत पैदा हुई कि मैं दर्द भूल गया और ये तकलीफ़ उस दर्द से बढ़कर मालूम हुई कि एक काफ़िर का हाथ मेरे पेट पर है तो तुम्हें भी ऐसे ही काफ़िर से दुश्मनी रखना चाहिये। (मल्फ़ूज़ाते आअ़ला हज़रत–सफ़ाह–276)

हिन्दुओं को खुश करने के लिये गाय की कुर्बानी न करना हराम हराम सख़्त हराम है जो गाय की कुर्बानी बन्द करेगा वो जहन्नम के शदीद अ़ज़ाब का मुस्तहिक़ होगा और रोज़े क़यामत मुशरिकों के साथ एक रस्सी में बांधा जायेगा।
(अहकामे शरीअ़त–सफ़ा–157)

काफ़िर व मुशरिक को अख़लाक़ में अच्छा कहना गुनाह है। (अहकामे शरीअ़त–सफ़ा–193)

हिन्दुओं के जनाज़े के साथ अगर इस एतक़ाद से जायेगा कि उसका जनाज़ा शिरकत के लायक़ है तो काफ़िर हो जायेगा अगर ये नहीं तो हराम है।
(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–सफ़ा–4/460)

हिन्दुओं के मन्दिर शैतानों का ठिकाना है।
(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–सफ़ा–4/480)

सुवाल–कि मुसलमान डूब रहा है और ग़ैर मुस्लिम तैराक हाथ दे तो जान बचाना चाहिये या नहीं''
जवाब– अगर उसको डूबने पर यक़ीन न हो और हाथ पैर मारकर बच जाने की उम्मीद हो या कोई दरख़्त वग़ैराह मिलने का गुमान हो तो काफ़िर को हाथ देने की इजाज़त नहीं इससे माअ़लूम होता है कि कुफ़्फ़ार से मुआ़मलात (कामकाज कारोबार या बाहम मिलकर कोई काम करना व ख़रीद फ़रोख़्त और तअ़ाल्लुक़) की भी इजाज़त नहीं।
(अहकामे शरीअ़त–सफ़ा–213)

गन्दे अक़ाइद व इहतिमाली मसाइल

01– अगर किसी मुसलमान ने किसी ज़िम्मी को सुअर व शराब बेचने या ख़रीदने के लिये वकील बनाया तो इमाम आज़म के नज़दीक जाइज़ है।
(फ़तावा–आ़लम गीरी–4/367)

जबकि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने शराब व सुअर की ख़रीद फ़रोख़्त को हराम कर दिया है।

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने शराब, मुर्दार, ख़िन्जीर और बुतों की ख़रीद व फ़रोख़्त को हराम कर दिया और मुर्दार की चर्बी को भी हराम कर दिया।
(बुख़ारी–सही–2/554-ह०–2236)
(अबू दाऊद–सुनन–4/748-ह०–3486)
(निसाई–सुनन–3/196-ह०–4262)

02– कुत्ते और गधे को ज़िब्हा करके गोस्त बेचना जाइज़ है। (फ़तावा–आ़लम गीरी–4/367)

सिवाय तीन असबाब के जब कुत्ते को पालना नाजाइज़ और कुत्ते का गोस्त खाना हराम है तो–

उसको ज़िब्हा करके गोस्त बेचना कैसे जाइज़ हो सकता है।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर एक दाँत वाले दरिन्दे का खाना हराम है (यानी जो दाँतों से शिकार करता हो जैसे शेर, भेड़िया, कुत्ता, बिल्ली, वग़ैराह।
(नसाई–सुनन–3/244-ह०–4331)

03– कुत्ते या बिल्ली को बुलाने या गधे को हाँकने से नमाज़ फ़ासिद नहीं होती। (दुर्रे मुख़्तार–1/322)

जब नमाज़ में इधर उधर देखने से नमाज़ फ़ासिद हो जाती है तो कुत्ते या बिल्ली को बुलाने या गधे को हाँकने से नमाज़ फ़ासिद क्यों नहीं होगी।

➡ हज़रत आयशा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हा) फ़रमाती हैं कि मैंने हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से उस शख़्स के मुताअ़ल्लिक़ दरयाफ़्त किया जो नमाज़ में इधर उधर देखता है तो आप सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया ये शैतान की एक झपट है इसके ज़रिये से वो तुममें से किसी एक की नमाज़ को उचक ले जाता है यानी नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। (बुख़ारी–सही–3/490-ह०–3291)

04–औ़रत ने मर्द के बोसे लिये और तरी पाई तो रोज़ा नहीं टूटा मगर इमाम अबू युसूफ़ के नज़दीक रोज़ा टूट जायेगा। (फ़तावा–आ़लम गीरी–2/23)

05–जानवर या मुर्दे से जिमाअ़ किया मगर इंज़ाल नहीं हुआ तो रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा।
(दुर्रे मुख़्तार–1/564) (फ़तावा–आ़लम गीरी–2/23)

06–मुर्दा औ़रत या छोटी लड़की से वती की रान या पीठ में वती की तो रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा। (दुर्रे मुख़्तार–1/564)

07–मनी अपने हाथ से निकाले या औ़रत के हाथ से निकलवाये या मर्द व औ़रत बाहम नंगे होकर शर्मगाहें मिलादें अगर इंज़ाल नहीं हुआ तो रोज़ा फ़ासिद नहीं होगा। (फ़तावा–आ़लम गीरी–2/23)

08– हालते रोज़ा हाथ से मनी निकालने से रोज़ा फ़ासिद नहीं होता। (दुर्रे मुख़्तार–1/564)

हालते रोज़ा में मज़कूरा तमाम बातें आदाबे रोज़ा के ख़िलाफ़ हैं क्योंकि रोज़ा महज़ भूके और प्यासे रहने का नाम नहीं है बल्कि भूक और प्यास के साथ साथ तमाम जिस्मी आज़ा को शर व बुराई और बेहयाई से महफ़ूज़ रखने का नाम रोज़ा है जिसकी बेहतरीन जज़ा और अज्रे अ़ज़ीम का खुद अल्लाह तआ़ला ने वाअ़दा फ़रमाया है कि रोज़ेदार को उसके रोज़े का बदला मैं खुद दूँगा।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ाला फ़रमाता है कि रोज़ा ख़ास मेरे लिये है और मैं खुद उसका बदला दूँगा चूँकि इन्सान अपनी ख़्वाहिश व ग़िज़ा को मेरे लिये छोड़ देता है।
(बुख़ारी–सही–2/392-ह०–1894)
(मुस्लिम–सही–3/149-ह०–2707)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/447-ह०–764)
(इब्ने माजा–सुनन–1/556-ह०–1638)
(निसाई–सुनन–2/59-ह०–2219)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बहुत से रोज़दार ऐसे हैं कि जिन्हें भूक प्यास के अ़लावा कुछ हासिल नहीं होता। (इब्ने माजा–1/571-ह०–1690)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो हालते रोज़े में हो और झूठी, बेहूदा बातें और ग़ीबत व फ़रेब करे और उस पर अ़मल न छोड़े तो अल्लाह तआ़ाला को उसके खाना पीना छोड़ने की कुछ परवाह नहीं
(बुख़ारी–सही–2/397-ह०–1903,6057)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/420-ह०–707)
(इब्ने माजा–सुनन–1/571-1ह०–689)

09– बदन के किसी भी हिस्से पर नजिस लगी हो चाटने से पाक हो जाती है। (दुर्रे मुख़्तार–1/164)
(फ़तावा–आ़लम गीरी–1/247)
(फ़तावा रिज़विया–4/465)

नजिस ख़्वाह ग़लीज़ा हो या ख़फ़ीफ़ा हो उसका चाटना किसी सूरत जाइज़ नहीं है क्योंकि वो गन्दगी है और अल्लाह तआ़ला ने हमें साफ़ व पाकीज़ा चीज़ें खाने का हुक्म फ़रमाया है–

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो उन पाकीज़ा चीज़ों में से खाओ जो हमने तुम्हें अ़ता की हैं और अल्लाह का शुक्र अदा करो (सू०–बक़राह–2/172)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
पस जो हलाल व पाकीज़ा रिज़्क़ अल्लाह ने तुम्हें अ़ता किया है सो तुम उसमें से खाया करो और अल्लाह की नेअ़मतों का शुक्र बजा लाते रहो।
(सू०–नह्ल–16/114)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
आज तुम्हारे लिये पाकीज़ा चीज़ें हलाल कर दी गईं हैं (सू०–मायदा–5/5)

10– शराब, गेहूँ, जौ, शहद, आलू बुखारा व ज्वार की हलाल है अगर मीठी हो।
(फ़तावा–आ़लम गीरी–6/272)

शराब किसी भी चीज़ की बनी हो उसका पीना हराम है क्योंकि जिस चीज़ की हुरमत कुरान व अहादीस से साबित हो जाये वो किसी भी सूरत जाइज़ व हलाल नहीं हो सकती।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
आप से शराब और जुऐ की निस्बत सवाल करते हैं (आप) फ़रमांदें कि इन दोनों में बड़ा गुनाह है। (सू०-बक़राह-2/219)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-
ऐ ईमान वालो बेशक शराब व जुआ और नसब किये गये बुत और फ़ाल के तीर (सब) नापाक व शैतानी काम हैं सो तुम इनसे परहेज़ करो ताकि तुम फ़लाह पाओ। (सू०-मायदा-5/90)

➡हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने उन्हें यमन का हाकिम बनाकर भेजा तो उन्होंने आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से उन मशरुबात (पीने की चीज़ों) के मुताअ़ल्लिक़ सवाल किया जो वहाँ जौ से तैयार की जाती थीं जिन्हें मिज़्र व कुछ मशरुबात शहद से तैयार की जाती थीं जिन्हें बित्अ़ कहा जाता था तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर नशा आवर चीज़ हराम है। (बुख़ारी-सही-4/382,ह०-4343,4344)

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि जब शराब की हुरमत नाज़िल हुई तो उस वक़्त ये पाँच चीज़ों से तैयार होती थी अंगूर, ख़जूर, शहद, गन्दुम व जौ से और शराब (ख़म्र) से मुराद हर वो चीज़ है जो अ़क़्ल पर पर्दा डाल दे (अबू दाऊद–सुनन–4/865-ह०–3669) (निसाई–सुनन–73/640-ह०–5585)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने शराब पीने वाले, पिलाने वाले, बेचने वाले ख़रीदने वाले अंगूर निचोड़ने वाले, निचुड़वाने वाले और उसके उठाने वाले और जिसकी तरफ़ उठाई जा रही हो उन सब पर लाअ़नत फ़रमाई है। (अबू दाऊद–सुनन–4/868-ह०–3674)

➡ हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस चीज़ की कसीर मिक़्दार नशा आवर हो उसकी क़लील मिक़्दार भी हराम है।
(अबू दाऊद–सुनन–4/872-ह०–3681)
(निसाई–सुनन–3/647-ह०–5614)

➡ हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) से शहद की शराब के बारे में

अ़र्ज़ किया गया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शराब में नशा हो वो हराम है।
(मुस्लिम–सही–5/237-ह०–5211)
(निसाई–सुनन–3/643-ह०–5597,5598)

11– दस (10) साल का लड़का बालिग़ा औ़रत से जिमाअ़ करे तो गुस्ल वाजिब नहीं।
(फ़तावा–आ़लम गीरी–1/205)

12– जानवर या मुर्दार या कम उम्र की लड़की से जिमाअ़ करे और इंज़ाल न हो तो गुस्ल फ़र्ज़ नहीं
(दुर्रे मुख़्तार–1/95)

गुस्ल का वुजूब मनी निकलने पर नहीं है बल्कि हशफ़ा (सुपारी, सरे ज़कर) जब फुर्ज में दाख़िल हो जाये तो मर्द व औ़रत दोनों पर गुस्ल वाजिब हो गया मगर जब उनमें कोई ना बालिग़ हो तो उस पर वाजिब नहीं लेकिन वो जुनुब (नापाक) होगा और उसके वली पर लाज़िम है कि उसे गुस्ल का हुक्म दे जैसे वुजू का हुक्म देता है और अगर वो बग़ैर गुस्ल के नमाज़ पढ़ेगा तो उसकी नमाज़ सहीह न होगी और गुस्ल के लिये सिर्फ़ हशफ़ा का ग़ायब होना काफ़ी है तमाम ज़कर का ग़ायब हो ज़रुरी नहीं।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शौहर उस बीवी की चार शाख़ों के दरमियान बैठे और ख़त्ने को ख़त्ने से मिलादे तो गुस्ल वाजिब हो गया चाहे इन्ज़ाल न हो। इमाम मुस्लिम ने बाब बांधा कि मनी नहीं निकलने से गुस्ल वाजिब नहीं है ये मन्सूख़ है। (मुस्लिम–सहीह–4/437-ह०–783, 785)
(अबू दाऊद–1/222-ह०–216)
(मुस्नद अहमद–10/350-22396)

➡ हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब बढ़ जाये ख़त्ने का मक़ाम ख़त्ने के मक़ाम से यानी हशफ़ा (सुपारी) ग़ायब हो जाये तो गुस्ल वाजिब हो गया।
(इब्ने माजा–सुनन–1/216-ह०–611)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/133-ह०–109)

13– औ़रत की रतूबत पाक है यानी जो शर्मगाह से निकलती है। (दुर्रे मुख़्तार–1/96,166)

14– मनी कपड़े पर सूख जाये तो रगड़ कर साफ़ करने से कपड़ा पाक हो जाता है।
(दुर्रे मुख़्तार–1/165)

15– अगर सोये हुये मर्द से खुद औ़रत ने वती की और मर्द ने अपने नफ़्स पर काबू दे दिया ता उन दोनों पर कोई हद नहीं।
(फ़तावा–आ़लम गीरी–3/255)

16– ख़लीफ़ा, बादशाह, इमाम ज़िना करें तो कोई सज़ा नहीं। (फ़तावा–आ़लम गीरी–3/254)

17– ना बालिग़ ने ऒ़रत से ज़िना किया और ऒ़रत ने काबू दे दिया तो दोंनो पर कोई हद नहीं। (फ़तावा–आ़लम गीरी–3/254)

18– ना बालिग़ ने ना बालिग़ से ज़िना किया तो कोई हद नहीं। (फ़तावा–आ़लम गीरी–3/254)

19– जिस ऒ़रत को इजारह (ख़र्च देकर) लिया गया हो उससे ज़िना करे तो कोई हद नहीं। (फ़तावा–आ़लम गीरी–3/253)

20– जो ऒ़रते हमेशा के लिये हराम हैं जैसे माँ बहन बेटी फूफ़ी, खाला, इनसे निकाह करे और सुहवत करे बशर्ते हराम जानकर तो कोई हद नहीं (दुर्रे मुख़्तार–सफ़ाह–जिल्द–2–सफ़ाह–472)

जबकि महरम से निकाह करने वाले शख़्स की सज़ा क़त्ल है।

➡ हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उन्हें उस आदमी की तरफ़ भेजा जिसने अपने वालिद की बीवी से निकाह किया था और उन्हें हुक्म दिया कि उसका सर आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हों। (इब्ने अबी शैबा–11/101-ह०–37301)
अहकामे शरीअ़त में हर गुनाह व ग़लती की सज़ा

या कफ़्फ़ारा मुतय्यन है तो माँ, बहन, बेटी, फूफ़ी, खाला, वग़ैराह से निकाह करने बाले पर कोई हद (शरई सज़ा) न हो ये कैसे मुम्किन हो सकता है।

21– हराम चीज़ों से इलाज जाइज़ है अगर उसमें शिफ़ा का इल्म हो और कोई दूसरी दवा माअ़लूम न हो अगर किसी को नकसीर आये फिर वो खून के साथ अपनी पेशानी व नाक पर सूरह फ़ातिहा लिखे तो शिफ़ा हासिल करने के लिये जाइज़ है और पेशाब से भी सूरह फ़ातिहा लिखे अगर उस में शिफ़ा माअ़लूम है तो उसमें कोई हर्ज नहीं।
(मआ़ज़ अल्लाह अस्तग़फ़िरुल्लाह)
(रद्दुल मुह्तार–अ़रबी–1/356)
(फ़तावा शामी–उ़र्दू–1/477)

मज़कूरा फ़तवे में अल्लाह तआ़ला के इस्मे पाक और कुरान पाक की बेहुरमती और बेअ़दबी है चूंकि पेशाब जो नजिस है तो उससे सूरह फ़ातिहा लिखना गुनाहे कबीरा और फेअ़ले मज़मूम और दोज़ख़ में ले जाने वाला अ़मल है जबकि कुरान और अल्लाह तआ़ला के इस्में पाक का अ़दब व इहतिराम कायनात की हर शैः से बढ़कर करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है।

मज़कूरा इहतिमाली मसाइल बेमाअ़ना व बेसरो पैर और बिल्कुल ग़लत और खिलाफ़े शरअ़ हैं।

वल्लाहु तआ़ला आ़लमू व रसूलुहू आ़लम०

बरेलवीयों के मरकज़ फ़तवो के कारख़ाने हैं

अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी एक सुवाल के जवाब में लिखते हैं कि वहाबी या ग़ैर मुक़ल्लिद से मेल जोल मुत्लक़न हराम है व उसके साथ शादी ब्याह ख़ालिस ज़िना है। (फ़तावा रिज़विया–24/330)

अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी एक सुवाल के जवाब में लिखते हैं कि ग़ैर मुक़ल्लिद यानी अह्ले हदीस गुमराह बद्दीन हैं उन्हें इमाम बनाना हराम और उनके पीछे नमाज़ पढ़ना मनाअ़ है और उनसे मेलजोल आग है व उन्हें हरगिज़ हरगिज़ मस्जिद में न आने दिया जाये। (फ़तावा रिज़विया–6/499)

अहमद रज़ा खान बरेलवी एक सुवाल के जवाब में कहते हैं कि वहाबियों की नमाज़ नमाज़ नहीं है और न जमाअ़त जमाअ़त है और वहाबियों की मस्जिद कुफ़्फ़ार की मस्जिद मिस्ल घर के है और जिस तरह उनकी नमाज़ बातिल है उसी तरह से उनकी अज़ान भी बातिल है।
(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–हिस्सा–1–सफ़ा–125,167)

अहमद रज़ा बरेलवी ने हुस्सामुल हरमैन में लिखा कि देवबन्दी अपने कलिमाते कुफ़्र के सबब काफ़िर व मुरतद हैं और जो इनके काफ़िर होने में शक करे वो भी काफ़िर है। (हुस्सामुल हरमैन–सफ़ा–5)
(मल्फ़ूज़ाते आला हज़रत–हिस्सा–1–सफ़ा–129)

इस्माईल देहलवी काफ़िर था गन्गोही व नानोतवी, थानवी, सब वहाबी खुले मुरतद हैं और जो इनमें से किसी का मुअ़तक़िद हो वो इब्लीस का बन्दा जहन्नम का कुन्दा है और ग़ैर मुक़ल्लिदीन पक्के शैतान और पूरे लाअ़नत वाले हैं।
(सुबहानस सुबूह–सफ़ा–134)

अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी ने हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) के कुफ़्र पर किताब लिखी जबकि वो मोमिन व सहाबी–ए–रसूल थे और रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की पर'वरिश हज़रत अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) ने की हत्ता कि आप (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) का निकाह कराया और खुत्बा पढ़ा।

अहमद रज़ा खान बरेलवी के परपोते अख़्तर रज़ा खान उ़र्फ़ अज़हरी मियाँ ने शेखुल इस्लाम डाक्टर मुहम्मद ताहिरुल क़ादरी पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया बरेलवी उ़ल्माओं ने बेशुमार लोगों पर कुफ़्र का फ़तवा लगाया आख़िर कुफ़्र का फ़तवा लगाने का ये इख़्तियार उन्हें किसने दिया कि जिसे चाहें उसे काफ़िर बनादें और वो जिसे चाहें उसे इस्लाम से ख़ारिज करदें और हक़ीक़त ये है कि बरेलवियों ने हमेशा लोगों को इस्लाम से निकाला ही है कभी इस्लाम में किसी को दाख़िल नहीं किया व इन्होंने उम्मते मुस्लिमा में बाहमी इख़्तिलाफ़ व इन्तिशार और नफ़रत और बुग्ज़ व अ़दावत के माहौल को बपा किया और ये बरेलवी दीन इस्लाम को खुद–

की जागीर समझते हैं और दीन इस्लाम को अपनी तबीअ़त के मुताबिक़ चलाना चाहतें हैं मगर ऐसा करना ना मुम्किन है बरेलवियों के मरकज़ फ़तवों के कारख़ाने हैं यहाँ से आये दिन किसी न किसी के ख़िलाफ़ फ़तवे निकलते रहते हैं कभी ताज़िया व ढोल के ख़िलाफ़ व कभी दरगाहों पर ख़वातीन की हाज़िरी पर व कभी किसी के कुफ़्र पर और दीगर उमूर के ख़िलाफ़ फ़तवे निकलते रहते हैं।

अहमद रज़ा की ताअ़रीफ़ो तौसीफ़ में बरेलवी उ़ल्माओं के इंतिहाई मुबालग़े

अहमद रज़ा ख़ान बरेलवी के दीनो मज़हब के पैरोकार उ़ल्मा अहमद रज़ा बरेलवी को मुजद्‌दिदे दीनो मिल्लत इमाम अह्‌ले सुन्नत और बड़े बड़े लक़ब देते हैं हत्ता कि नबी के बराबर समझते हैं इन बरेलवी मुल्लाओं ने अहमद रज़ा की शान में इंतिहाई मुबालग़े करके इतना बुलन्द किया जिसकी कोई हद न रही और अहमद रज़ा बरेलवी को आला हज़रत का लक़ब दे दिया और ये अहमद रज़ा के मुक़ाबले में बड़े बड़े अकाबिरीन उ़ल्माए किराम की मुस्तनद बातों को भी रद्‌द कर देते हैं

मौलवी इरफ़ान अ़ली क़ादरी जो अहमद रज़ा के मुरीद थे बयान करते हैं कि आला हज़रत कभी कभी अपने बचपन के हालात बयान करते थे एक रोज़ आपने इरशाद फ़रमाया कि मेरी उ़म्र तीन या साढ़े तीन साल की होगी कि मैं मुहल्ले की एक मस्जिद के सामने खड़ा हुआ था कि एक साहब-

अह्ले अ़रब के लिबास में जलवा फ़रमां हुये और उन्होंने अ़रबी ज़बान में मुझसे गुफ़्तगू की तो मैंने भी फ़सीह अ़रबी में उनकी बातों का जवाब दिया और उसके बाअ़द उस बुजुर्ग हस्ती को कभी नहीं देखा (अल मीज़ान इमाम अहमद रज़ा–सफ़ा–337)

''आला हज़रत का लग़ज़िशों से महफ़ूज़ रहना'' इस उ़नवान के तहत अहकामे शरीअ़त में लिखा है कि उ़ल्मा–ए–दीन के आअ़ला कारनामे चौदह सदियों से चले आ रहे हैं मगर लग़ज़िशे इ़ल्म व ज़बान से महफ़ूज़ रहना ये अपने बस की बात नहीं लफ़्ज़ों के इस्तेअ़माल में बे इहतियातयाँ हो जाती हैं क़ौले हक़ के लहजे मे बूए हक़ नहीं है और हवाला जात में अस्ल के बग़ैर नक़ल पर ही क़नाअ़त करली गई मगर हमको और हमारे साथ सारे उ़ल्मा–ए–अ़रब व अजम को इअ़तिराफ़ है कि आला हज़रत की जुबान व क़लम का ये हाल देखा कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया और ज़बान व क़लम नुक्ता बराबर भी ख़ता करे इसको नामुम्किन बना दिया।
(अहकामे शरीअ़त–सफ़ा–9)

बाअ़ज़ मशाइख़े किराम को ये कहते सुना कि इन को देखकर सहाबा की ज़ियारत का शौक कम हो गया। (वसाया शरीफ़–सफ़ा–24)

तू दीदारे मुजतबा है। (यानी नबी के बराबर)
(वसाया शरीफ़–सफ़ा–75)

आपके औसाफ़ तक किसकी रसाई हो भला
हो नबी के मुअ़जिज़ाह बस ख़त्म है इसपे सखुन
(आला हज़रत आला सीरत-सफ़ा-170)

शिफ़ा बीमार पाते हैं तुफ़ैल हज़रत ईसा
है ज़िन्दा कर रहा मुर्दे ख़िराम अहमद रज़ा का
(यानी अहमद रज़ा हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) से मुअ़जिज़े में बढ़कर हैं)
(मदाहे आला हज़रत-सफ़ा-25)

अहमद रज़ा की ज़ात अ़क्से पयम्बर (उ़न्वान) (यानी अम्बिया के बराबर) (सवानेह आला हज़रत -तजल्लियाते अहमद रज़ा सफ़ा-25)

आपका हामिद है हामिद सय्यदे कौनेन का
है वो तेरी शान अहमद रज़ा
(यानी अहमद रज़ा की हम्द गोया रसूलुल्लाह की हम्द है) (आला हज़रत आला सीरत-सफ़ा-166)

तेरी ताअ़ज़ीम है सरकारे अ़रब की ताअ़ज़ीम
(यानी अहमद रज़ा की ताअ़ज़ीम रसूलुल्लाह की ताअ़ज़ीम है) (मदाहे आला हज़रत-सफ़ा-28)

हरम वालों ने माना है तुमको अपना क़िब्ला व काअ़बा
जो क़िब्ला अह्ले क़िब्ला का है वो क़िब्ला नुमा तुम हो (यानी अहमद रज़ा क़िब्ला व काअ़बा)
(मदाहे आला हज़रत-सफ़ा-30)

क़ब्र व नश्र व हश्र में मेरा साथ दे
हो मेरा मुश्किल कुशा अहमद रज़ा
(मदाहे आला हज़रत–सफ़ा–48)

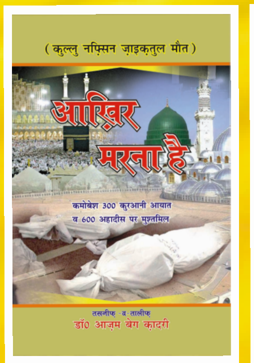
कौन देता है मुझको किसने दिया
जो दिया तुमने दिया अहमद रज़ा
दौनो आ़लम में है तेरा आसरा
हाँ मदद फ़रमां अहमद रज़ा
हश्र में हो जब क़यामत की तपिश
अपने दामन में छुपा अहमद रज़ा
जब ज़बाने सूख जायें प्यास से
जामे कौसर पिला अहमद रज़ा
(मदाहे आला हज़रत–सफ़ा–48)

ये दुआ़ है ये दुआ़ है ये दुआ़
तेरा व सबका खुदा अहमद रज़ा
(मदाहे आला हज़रत–सफ़ा–43)

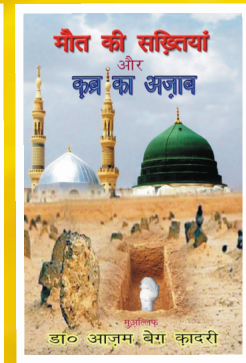
कोई क्यूँ पूछे तेरी बात रज़ा
तुझसे कुत्ते हज़ार फिरते हैं
(हदायके बख़्शिश–सफ़ा–100)

वल्लाहु तआ़ला आ़लमू व रसूलुहू आ़लम०

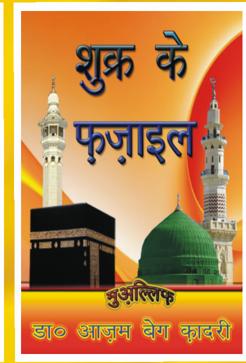
★★★★★

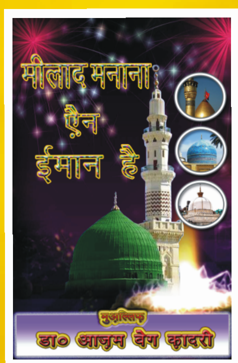


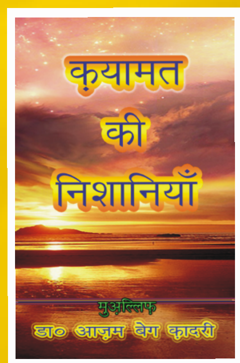




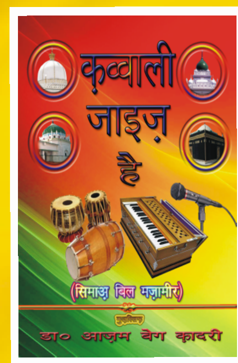








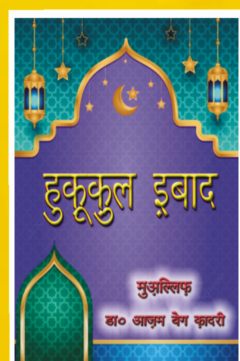






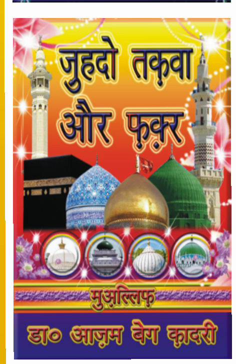


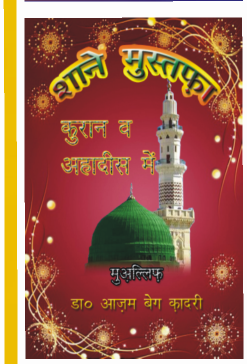


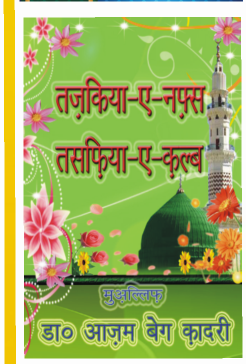


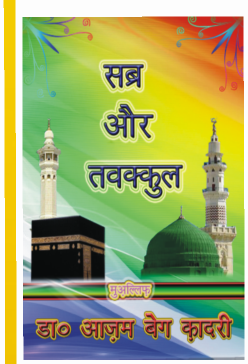


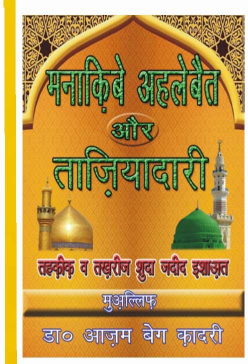


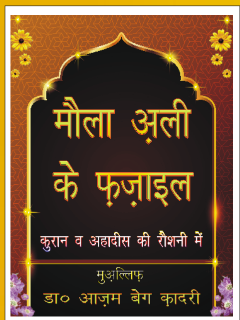












ISBN 978-93-343-7478-0
9 789334 374780

